ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

क्षेत्रीये अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड

(www.bauranchi.org /www.bau-eagriculture.com)

BAU — **मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- दुमका** — IMD

(amfudumka@gmail.com)

Ref:... 55/AAS/Dumka, Jharkhand — Dated: 09.11.2018

विरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत छेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग राँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनो का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

मौसम इकाई	दिनांक				
	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षापात (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (°c)	30	30	30	30	29
न्यूनतम तापमान (°c)	17	18	17	17	16
आकाश में बादल की स्थिति	आंशिक रूप में बादल छाये रहेगें	आंशिक रूप में बादल छाये रहेगें	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा
अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	57	51	48	49	48
न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	36	31	25	28	26
हवा की गति (कि.मी/घंटा)	0	4	4	2	4
हवा की दिशा	दक्षिण	पश्चिम	पश्चिम	उत्तर - पश्चिम	उत्तर - पुरब

फसल की अवस्था :-

फसल	अवस्था	फसल	अवस्था
धान	कटनी की अवस्था	लतरने वाले सब्जी	कटनी की अवस्था
चना , राई, पीला सरसों और मटर	शाकिये अवस्था	भिंडी एवं बोदी	कटनी की अवस्था
तिल,उरद एवं मुँगफली ,	कटनी की अवस्था	अदरख ,हल्दी एवं ओल	परिपक्व की अवस्था
टमाटर ,बैगन ,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी	रोपाई से लेकर कटनी की अवस्था	कुल्थी, एवं अरहर ,	शाकिये अवस्था
सरगुजा	शाकिये अवस्था से लेकर पुष्पावस्था	आलु ,प्याज और सब्जी मटर	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था
पापीता	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था	गेहूँ	बोआई हेतु खेत की तैयारी

मौसम पूर्वानुमान पर अधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनो के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एव तापमान मे कमी की सम्भावना है| किसान भाई खेत की जोताई एवं रबी फसल की बोआई करे | रबी फसल के लिए अगात प्रभेदो का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलो के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करे | किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैगन ,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलु और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरिया ,तीसी,मसूर एवं चना की खेती करे |

धान	1)धान परिपक्व की अवस्था में है ,अतः धान की कटनी करे , यदि बालियों में आभसी कन्ड रोग है तो प्रभावित बालियो को निकाल कर जल दे| खालिहान में धान झाडकर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवारो की दरारो को बन्द कर दे साथ ही साथ मालाथियान 50 ई सी का एक भाग को 300 भाग पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करे। पुरानी बोरियो का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उबाले। भंडार गृह एवं बोरियों के अच्छी तरह सुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पटरा या पोलीथिन की चादर बिछाकर बोरियो को दीवारो एवम छत से दुरियाँ बनाकर रखे।
गेहूँ	बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करे -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद – एच.यू.डब्लू.-468 ,डी.बी.डब्लू-39, के-9107 , के-1006, के-307 , बिरसा गेहूँ-3, एच.डी-2967, एच.डी-2733 की बुआई | 2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद –सी-306, के-8027 , के-8962 ,एच.डी-2643 की बोआई करें ||बुआई से पहले बीज को बीटावेक्स या वैविस्टीन या कार्वेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपेरिफास 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेन्टीमीटर खोलकर 100 क्विंटल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर कर बुआई करें।
अरहर	फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड य धावनगोल्ड कीटनशी का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोक्रोटोफॉस तरल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।
बरबटी एवं कुल्थी	भुआ पिलु से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुवो को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाईलपाराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के नियंत्रण हेतु क्विनालफॉस 25 ई.सी 1.5 लिटर प्रति 500 लिटर पानी के दर से छिड़काव करे और वयस्क पिल्लुओ का नियन्त्रण हेतु ट्राईजोफॉस या डाईक्लोरोवॉस 1 लिटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था मे छिड़काव करे | पीला शिरा रोग से नियंत्रण हेतु रोगी पौधो को सावधानी से उखाडकर मिट्टी मे दवा दे और सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु मेटासिस्टॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्योर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे|
राई एंव पीला सरसों	**राई** के उन्नत प्रभेद-शिवानी , पूसा बोल्ड, एन.आर. सी. एच.वी 101, पूसा मस्टर्ड और **पीला सरसों** के उन्नत प्रभेद- एन.आर. सी.वाई. एस 05-02 की बोआई एकल फसल के रूप मे करे। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेन्टीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें ।
चना	एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काबुली वैज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्लू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (देशी वैज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि मे से किसी एक की बुआई करें या तीसी-सरसों के साथ अन्तर फसल के रूप मे लगायें । बुआई से पहले बीज को वैविस्टीन एवं थीरम को 1 ः 2 के अनुपात में (वैविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात राईजोवियम कलचर या पी. एस. बी 20 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दुरी 10 सेन्टीमीटर पर बुआई करें
मसूर	मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू. बी.एल -77,एवं के. एल. एस. -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें।कतार से कतार 25 सेंन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेन्टीमीटर रखकर छोटे दानो के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बडे दानो के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें । बुआई से पहले बीज को वैविस्टीन एवं थीरम को 1 ः 2 के अनुपात में (वैविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।
तीसी	उन्नत प्रभेद -प्रियम एवं टी 397, (आसिंचित अवस्था में) शेखर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में), बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर , कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर बोआई करे । रोग ग्रस्त खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीसी की खेती न करे |
टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी	1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण समृद्धि ,पूसा हाइबिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आभा,बी.टी -2 । 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर , प्राइड ऑफ इंडिया और अर्ली इमहेड । 3)फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुसा दीपावली , कुआरी , अर्ली सिंथेटिक , पूसा केतकी आदि में से किसी एक का बिचड़ा नेट शेड में ऊँची बीजस्थली बनकर उगायें । बीज डालने से पहले बीज को कार्वेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राईकोग्रामा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम , सिंगल सुपर फॉसफेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेन्टीमीटर रखकर 8 से 10 दिनो के पौधा की रोपाई करें |
सब्जी मटर	उन्नत प्रभेद -आर्केल , काशी नन्दिनी , पी.एम-113 , पुसा प्रगति एवं अजाद पी - 1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंशित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचरित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचरित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेन्टीमीटर रख कर बुआई करें।
आलू	उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुखराज (अगात) , कुफरी कंचन , कुफरी पुस्कर एवं कुफरी लालिम (मध्यम),कुफरी सिन्दुरी एवं कुफरी चिपसोना-1(पिछात), इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुवाई के लिए चयन करें।बुआई के लिए 25 से 30क्विंटल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुवाई से पहले बीज को कार्वेडाजिम या मैनकोजेब या रेडोमिल एम.जेड.1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें ।खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नत्रजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम सल्फरपति हेक्टेयर के दर से बुवाई के समय डालें । नत्रजन की आधी मात्रा , फास्फोरस एवं पोटाश की पुरी मात्रा बुआई खुले कतार मे डाले | फसल की पत्तियां टेढी मेढी होने पर कालडेन 50 एस पी अत: बचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें | 25 से 30 दिनों के फसल की निकाई -गुड़ाई कर 162 किलोग्राम युरिया की बची मात्रा का भुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें |
प्याज	उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार ,एन 53 ,अरका निकेतन ,अरका कल्याण ,एग्रीफाउण्ड डार्क रेड ,पुसा वाईट ,पुसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलारी रेड की बिचड़ा उगाये । बिचड़ा उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा भिगाकर तत्पश्चात कार्वेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद बिजस्थली मे तापमान बनाये रखने हेतु जल्द अंकुरण होने तक पुआल से ढके।
पपीता	रिंग स्पाट वायरस तथा मौजेक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किस्में पुसा डवार्फ या हनीड्यू की रोपाई करे , रोपाई के लिए पौधो से पौधो के बीच की दुरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) ×60 (चौड़ाई) ×60 सेन्टीमिटर (गहरा) गड्ढा खोदें | गडढा में खाद की मात्रा - साड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करंज य नीम खाली 1 किलोग्राम ,डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम ,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाईलपाराथियन धुल 50 ग्राम खोदे हुए मिट्टी में मिलाकर भर दे तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें |
गोजाति	इस मौसम मे गोजाति पर खुरहा एवं चपका रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अताः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ.एम.डी. का टीकाकरण करा दे।
चारा फसल	दुग्ध की उत्पादन में बढ़ोत्रि हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट,यू.पी.ओ-812,एवं ओ.एस-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर ,अनुसंसित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमिटर में डालकर बोआई करें |

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

क्षेत्रीये अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड

(www.bauranchi.org /www.bau-eagriculture.com)

BAU **IMD**

मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- देवघर

(amfudumka@gmail.com)

Ref:... 55/AAS/Dumka, Jharkhand Dated: 09.11.2018

बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत छेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग राँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनो का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

मौसम इकाई	दिनांक				
	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षापात (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (°c)	30	30	30	30	29
न्यूनतम तापमान (°c)	17	17	16	15	15
आकाश में बादल की स्थिति	आंशिक रूप में बादल छाये रहेगें	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा
अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	56	49	45	48	44
न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	32	29	22	26	23
हवा की गति (कि.मी/घंटा)	0	5	5	4	3
हवा की दिशा	दक्षिण	उत्तर - पश्चिम	पश्चिम	उत्तर - पश्चिम	पुरब

फसल की अवस्था:-

फसल	अवस्था	फसल	अवस्था
धान	कटनी की अवस्था	लतरने वाले सब्जी	कटनी की अवस्था
चना , राई, पीला सरसों और मटर	शाकिये अवस्था	भिंडी एवं बोदी	कटनी की अवस्था
तिल,उरद एवं मुँगफली ,	कटनी की अवस्था	अदरख ,हल्दी एवं ओल	परिपक्व की अवस्था
टमाटर ,बैगन ,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी	रोपाई से लेकर कटनी की अवस्था	कुल्थी, एवं अरहर ,	शाकिये अवस्था
सरगुजा	शाकिये अवस्था से लेकर पुष्पावस्था	आलु ,प्याज और सब्जी मटर	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था
पापीता	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था	गेहूँ	बोआई हेतु खेत की तैयारी

मौसम पूर्वानुमान पर अधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनो के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एव तापमान मे कमी की सम्भावना है| किसान भाई खेत की जोताई एवं रवी फसल की बोआई करे | रवी फसल के लिए अगात प्रभेदो का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रवी फसलो के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करे | किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैगन ,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलु और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरीया ,तीसी,मसूर एवं चना की खेती करे |

धान	1)धान परिपक्व की अवस्था में है ,अतः धान की कटनी करे , यदि बालियाँ में आभसी कन्ड रोग है तो प्रभावित बालियो को निकाल कर जल दे| खालिहान में धान झाडकर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवारो की दरारो को बन्द कर दे साथ ही साथ मालाथियान 50 ई सी का एक भाग को 300 भाग पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करे। पुरानी बोरियो का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उबाले। भंडार गृह एवं बोरियाँ के अच्छी तरह सुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पटरा या पोलीथिन की चादर बिछाकर बोरियो को दीवारो एवम छत से दुरियाँ बनाकर रखे।
गेहूँ	बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करे -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद – एच.यू.डब्लू.-468 ,डी.बी.डब्लू-39, के-9107 , के-1006, के-307 , बिरसा गेहूँ-3, एच.डी-2967, एच.डी-2733 की बुआई | 2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद –सी-306, के-8027 , के-8962 ,एच.डी-2643 की बोआई करें ||बुआई से पहले बीज को बीटावेक्स या बैविस्टीन या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपेरिफास 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेन्टीमीटर खोलकर 100 क्विंटल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर कर बुआई करें।
अरहर	फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्व या स्पिनोसेड य धावनगोल्ड कीटनशी का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोक्रोटोफॉस तरल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।
बरबटी एवं कुल्थी	भुआ पिलु से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुवो को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाईलपाराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के नियंत्रण हेतु क्विनालफॉस 25 ई.सी 1.5 लिटर प्रति 500 लिटर पानी के दर से छिड़काव करे और वयस्क पिल्लुओ का नियन्त्रण हेतु ट्राईजोफॉस या डाईक्लोरोवॉस 1 लिटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था मे छिड़काव करे | पीला शिरा रोग से नियंत्रण हेतु रोगी पौधो को सावधानी से उखाडकर मिट्टी मे दवा दे और सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु मेटासिस्टॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्योर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे|
राई एंव पीला सरसों	**राई** के उन्नत प्रभेद-शिवानी , पूसा बोल्ड, एन.आर. सी. एच.बी 101, पूसा मस्टर्ड और **पीला सरसों** के उन्नत प्रभेद- एन.आर. सी.वाई. एस 05-02 की बोआई एकल फसल के रूप मे करे। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेंन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेंन्टीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें ।
चना	एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काबुली बेज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्ल्यू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (देशी बेज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि मे से किसी एक की बुआई करें या तीसी-सरसों के साथ अन्तर फसल के रूप मे लगायें । बुआई से पहले बीज को वैविस्टीन एवं थीरम को 1ः2 के अनुपात में (वैविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात राईजोबियम कलचर या पी. एस. बी 20 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेंन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दुरी 10 सेन्टीमीटर पर बुआई करें
मसूर	मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू. बी.एल -77,एवं के. एल. एस. -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें।कतार से कतार 25 सेंन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेंन्टीमीटर रखकर छोटे दानो के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बडे दानो के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें । बुआई से पहले बीज को वैविस्टीन एवं थीरम को 1ः2 के अनुपात में (वैविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।
तीसी	उन्नत प्रभेद -प्रियम एवं टी 397, (आसिंचित अवस्था में) शेखर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में), बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर , कतार से कतार 30 सेंन्टीमीटर खोलकर बोआई करे । रोग ग्रस्त खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीसी की खेती न करे |
टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी	1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण समपदा, स्वर्ण समृद्धि ,पूसा हाइबिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आभा,बी.टी -2 । 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर , प्राइड ऑफ इंडिया और अर्ली ड्रमहेड । 3)फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुसा दीपावली , कुआरी , अर्ली सिंथेटिक , पूसा केतकी आदि में से किसी एक का बिचड़ा नेट शेड में ऊँची बीजस्थली बनकर उगायें । बीज डालने से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राईकोग्रामा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) ऊँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात्त खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम , सिंगल सुपर फॉसफेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेंन्टीमीटर रखकर 8 से 10 दिनो के पौधा की रोपाई करें |
सब्जी मटर	उन्नत प्रभेद -आर्केल , काशी नन्दिनी , पी.एम-113 , पुसा प्रगति एवं अजाद पी - 1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंशित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किालोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचरित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचरित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेंन्टीमीटर रख कर बुआई करें।
आलू	उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुखराज (अगात) , कुफरी कंचन , कुफरी पुस्कर एवं कुफरी लालिम (मधयम),कुफरी सिन्दुरी एवं कुफरी चिपसोन-1 (पिछात), इत्यादि की बुआई करे। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुवाई के लिए चयन करें।बुआई के लिए 25 से 30क्विंटल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुवाई से पहले बीज को कार्बेडाजिम या मैनकोजेब या रेडोमिल एम.जेड.1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे धंटा उपचारित कर बुआई करें ।खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नत्रजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम सल्फरप्रति हेक्टेयर के दर से बुवाई के समय डालें । नत्रजन की आधी मात्रा , फास्फोरस एवं पोटाश की पुरी मात्रा बुआई खुले कतार मे डाले | फसल की पत्तियां टेढी मेढी होने पर कालडेन 50 एस पी अत: बचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें | 25 से 30 दिनों के फसल की निकाई -गुड़ाई कर 162 किलोग्राम युरिया की बची मात्रा का भुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें |
प्याज	उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार ,एन 53 ,अरका निकेतन ,अरका कल्याण ,एग्रीफाउण्ड डार्क रेड ,पुसा वाईट ,पुसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलारी रेड की बिचड़ा उगाये । बिचड़ा उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा भिगाकर तत्पश्चात कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद विजस्थली मे तापमान बनाये रखने हेतु जल्द अंकुरण होने तक पुआल से ढके।
पपीता	रिंग स्पाट वायरस तथा मौजेक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नबम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किस्में पुसा डवार्फ या हनीडियू की रोपाई करे , रोपाई के लिए पौधो से पौधो के बीच की दुरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) ×60 (चौड़ाई) ×60 सेन्टीमिटर (गहरा) गड़ढा खोदें |गड़ढा में खाद की मात्रा - साड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करंज य नीम खाली 1 किलोग्राम ,डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम ,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाईलपाराथियन धुल 50 ग्राम खोदे हुए मिट्टी में मिलाकर भर दे तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें |
गोजाति	इस मौसम मे गोजाति पर खुरहा एवं चपका रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अताः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ.एम.डी. का टीकाकरण करा दे।
चारा फसल	दुग्ध की उत्पादन में बढ़ोत्रि हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट,यू.पी.ओ-812,एवं ओ.एस-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर ,अनुसंसित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमिटर में डालकर बोआई करे |

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

क्षेत्रीये अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड

(www.bauranchi.org /www.bau-eagriculture.com)

BAU

मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- गिरिडीह

IMD

(amfudumka@gmail.com)

Ref:... 55/AAS/Dumka, Jharkhand Dated: 09.11.2018

विरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत छेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग राँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनो का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

मौसम इकाई	दिनांक				
	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षापात (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (°c)	31	31	31	30	30
न्यूनतम तापमान (°c)	17	18	17	17	16
आकाश में बादल की स्थिति	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा
अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	54	51	49	50	45
न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	34	29	24	28	26
हवा की गति (कि.मी/घंटा)	2	6	5	6	2
हवा की दिशा	दक्षिण - पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम

फसल की अवस्था:-

फसल	अवस्था	फसल	अवस्था
धान	कटनी की अवस्था	लतरने वाले सब्जी	कटनी की अवस्था
चना , राई, पीला सरसों और मटर	शाकिये अवस्था	भिंडी एवं बोदी	कटनी की अवस्था
तिल,उरद एवं मुँगफली ,	कटनी की अवस्था	अदरख ,हल्दी एवं ओल	परिपक्व की अवस्था
टमाटर ,बैगन ,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी	रोपाई से लेकर कटनी की अवस्था	कुल्थी, एवं अरहर ,	शाकिये अवस्था
सरगुजा	शाकिये अवस्था से लेकर पुष्पावस्था	आलु ,प्याज और सब्जी मटर	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था
पापीता	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था	गेहूँ	बोआई हेतु खेत की तैयारी

मौसम पूर्वानुमान पर अधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनो के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एव तापमान मे कमी की सम्भावना है| किसान भाई खेत की जोताई एवं रबी फसल की बोआई करे | रबी फसल के लिए अगात प्रभेदो का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलो के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करे | किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैगन ,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलु और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरिया ,तीसी,मसूर एवं चना की खेती करे |

धान	1)धान परिपक्व की अवस्था में है ,अतः धान की कटनी करे , यदि बालियों में आभसी कन्ड रोग है तो प्रभावित बालियो को निकाल कर जल दे| खालिहान में धान झाडकर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवागे की दरारो को बन्द कर दे साथ ही साथ मालाथियान 50 ई सी का एक भाग को 300 भाग पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करे। पुरानी बोरियो का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उबाले। भंडार गृह एवं बोरियाँ के अच्छी तरह सुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पटरा या पोलीथिन की चादर बिछाकर बोरियो को दीवागे एवम छत से दुरियाँ बनाकर रखे।
गेहूँ	बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करे -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद – एच.यू.डब्लू.-468 ,डी.बी.डब्लू-39, के-9107 , के-1006, के-307 , बिरसा गेहूँ-3, एच.डी-2967, एच.डी-2733 की बुआई	2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद –सी-306, के-8027 , के-8962 ,एच.डी-2643 की बोआई करें		बुआई से पहले बीज को बीटावेक्स या वैविस्टीन या कार्वेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपेरिफास 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेन्टीमीटर खोलकर 100 क्विंटल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर कर बुआई करें।
अरहर	फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड य धावनगोल्ड कीटनशी का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोक्रोटोफॉस तरल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।
बरबटी एवं कुल्थी	भुआ पिलु से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुवो को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाईलपाराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के नियंत्रण हेतु क्विनालफॉस 25 ई.सी 1.5 लिटर प्रति 500 लिटर पानी के दर से छिड़काव करे और वयस्क पिल्लुओ का नियन्त्रण हेतु ट्राईजोफॉस या डाईक्लोरोवॉस 1 लिटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था मे छिड़काव करे	पीला शिरा रोग से नियंत्रण हेतु रोगी पौधो को सावधानी से उखाडकर मिट्टी मे दवा दे और सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु मेटासिस्टॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्योर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे	
राई एंव पीला सरसों	**राई** के उन्नत प्रभेद-शिवानी , पूसा बोल्ड, एन.आर. सी. एच.वी 101, पूसा मस्टर्ड और **पीला सरसों** के उन्नत प्रभेद- एन.आर. सी.वाई. एस 05-02 की बोआई एकल फसल के रूप मे करे। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेन्टीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें ।
चना	एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काबुली वैज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्लू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (देशी वैज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि मे से किसी एक की बुआई करें या तीसी-सरसों के साथ अन्तर फसल के रूप मे लगायें । बुआई से पहले बीज को वेविस्टीन एवं थीरम को 1ः2 के अनुपात में (वेविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात राईजोवियम कलचर या पी. एस. वी 20 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दुरी 10 सेन्टीमीटर पर बुआई करें
मसूर	मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू. बी.एल -77,एवं के. एल. एस. -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें |कतार से कतार 25 सेंन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेन्टीमीटर रखकर छोटे दानो के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बडे दानो के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें । बुआई से पहले बीज को वेविस्टीन एवं थीरम को 1ः2 के अनुपात में (वेविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।
तीसी	उन्नत प्रभेद -प्रियम एवं टी 397, (आसिंचित अवस्था में) शेखर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में), बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर , कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर बोआई करे । रोग ग्रस्त खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीसी की खेती न करे	
टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी	1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण समृद्धि ,पूसा हाइबिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आभा,बी.टी -2 । 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर , प्राइड ऑफ इंडिया और अर्ली इमहेड । 3)फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुसा दीपावली , कुआरी , अर्ली सिंथेटिक , पूसा केतकी आदि में से किसी एक का बिचड़ा नेट शेड में ऊँची बीजस्थली बनकर उगायें । बीज डालने से पहले बीज को कार्वेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राईकोग्रामा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) ऊँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोवर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम , सिंगल सुपर फॉसफेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेन्टीमीटर रखकर 8 से 10 दिनो के पौधा की रोपाई करें	
सब्जी मटर	उन्नत प्रभेद -आर्केल , काशी नन्दिनी , पी.एम-113 , पुसा प्रगति एवं अजाद पी - 1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंशित मात्रा में सड़ी गोवर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचरित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचरित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेन्टीमीटर रख कर बुआई करें।
आलू	उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुखराज (अगात) , कुफरी कंचन , कुफरी पुस्कर एवं कुफरी लालिम (मध्यम),कुफरी सिन्दुरी एवं कुफरी चिपसोना-1(पिछात), इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुवाई के लिए चयन करें|बुआई के लिए 25 से 30क्विंटल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुवाई से पहले बीज को कार्वेडाजिम या मैनकोजेब या रेडोमिल एम.जेड.1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें |खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोवर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नत्रजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम सल्फरपति हेक्टेयर के दर से बुवाई के समय डालें । नत्रजन की आधी मात्रा , फास्फोरस एवं पोटाश की पुरी मात्रा बुआई खुले कतार मे डाले	फसल की पत्तियां टेढी मेढी होने पर कालडेन 50 एस पी अत: बचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें	25 से 30 दिनों के फसल की निकाई -गुड़ाई कर 162 किलोग्राम युरिया की बची मात्रा का भुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें	
प्याज	उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार ,एन 53 ,अरका निकेतन ,अरका कल्याण ,एग्रीफाउण्ड डार्क रेड ,पुसा वाईट ,पुसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलारी रेड की बिचड़ा उगाये । बिचड़ा उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा भिगाकर तत्पश्चात कार्वेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद बिजस्थली मे तापमान बनाये रखने हेतु जल्द अंकुरण होने तक पुआल से ढके।
पपीता	रिंग स्पाट वायरस तथा मौजेक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किस्में पुसा डवार्फ या हनीडियू की रोपाई करे , रोपाई के लिए पौधो से पौधो के बीच की दुरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) ×60 (चौड़ाई) ×60 सेन्टीमिटर (गहरा) गड्ढा खोदें	गडढा में खाद की मात्रा - साड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करंज य नीम खाली 1 किलोग्राम ,डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम ,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाईलपारायिथन धुल 50 ग्राम खोदे हुए मिट्टी में मिलाकर भर दे तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें	
गोजाति	इस मौसम मे गोजाति पर खुरहा एवं चपका रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अताः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ.एम.डी. का टीकाकरण करा दे।	
चारा फसल	दुग्ध की उत्पादन में बढ़ोत्रि हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट,यू.पी.ओ-812,एवं ओ.एस-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर ,अनुसंसित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमिटर में डालकर बोआई करें	

(राजू लिन्डा) (डॉ. ए. वदूद) (डॉ.पी. वी.साहा)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

क्षेत्रीये अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड

(www.bauranchi.org /www.bau-eagriculture.com)

BAU — IMD

मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- धनबाद

(amfudumka@gmail.com)

Ref:... 55/AAS/Dumka, Jharkhand — Dated: 09.11.2018

विरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत छेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग राँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनो का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

मौसम इकाई	दिनांक				
	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षापात (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (°c)	28	29	29	28	28
न्यूनतम तापमान (°c)	14	15	14	13	13
आकाश में बादल की स्थिति	आंशिक रूप में बादल छाये रहेगें	आंशिक रूप में बादल छाये रहेगें	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा
अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	57	51	47	54	49
न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	29	27	23	24	24
हवा की गति (कि.मी/घंटा)	2	6	5	6	2
हवा की दिशा	दक्षिण - पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम

फसल की अवस्था :-

फसल	अवस्था	फसल	अवस्था
धान	कटनी की अवस्था	लतरने वाले सब्जी	कटनी की अवस्था
चना , राई, पीला सरसों और मटर	शाकिये अवस्था	भिंडी एवं बोदी	कटनी की अवस्था
तिल,उरद एवं मुँगफली ,	कटनी की अवस्था	अदरख ,हल्दी एवं ओल	परिपक्व की अवस्था
टमाटर ,बैगन ,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी	रोपाई से लेकर कटनी की अवस्था	कुल्थी, एवं अरहर ,	शाकिये अवस्था
सरगुजा	शाकिये अवस्था से लेकर पुष्पावस्था	आलु ,प्याज और सब्जी मटर	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था
पापीता	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था	गेहूँ	बोआई हेतु खेत की तैयारी

मौसम पूर्वानुमान पर अधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनो के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एव तापमान मे कमी की सम्भावना है| किसान भाई खेत की जोताई एवं रबी फसल की बोआई करे | रबी फसल के लिए अगात प्रभेदो का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलो के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करे | किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैगन ,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलु और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरिया ,तीसी,मसूर एवं चना की खेती करे |

धान	1)धान परिपक्व की अवस्था में है ,अतः धान की कटनी करे , यदि बालियों में आभसी कन्ड रोग है तो प्रभावित बालियो को निकाल कर जल दे| खालिहान में धान झाडकर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवागे की दरारो को बन्द कर दे साथ ही साथ मालाथियान 50 ई सी का एक भाग को 300 भाग पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करे। पुरानी बोरियो का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उबाले। भंडार गृह एवं बोरियाँ के अच्छी तरह सुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पटरा या पोलीथिन की चादर बिछाकर बोरियो को दीवागे एवम छत से दुरियाँ बनाकर रखे।
गेहूँ	बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करे -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद – एच.यू.डब्लू.-468 ,डी.बी.डब्लू-39, के-9107 , के-1006, के-307 , बिरसा गेहूँ-3, एच.डी-2967, एच.डी-2733 की बुआई	2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद –सी-306, के-8027 , के-8962 ,एच.डी-2643 की बोआई करें		बुआई से पहले बीज को बीटावेक्स या बैविस्टीन या कार्वेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपेरिफास 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेन्टीमीटर खोलकर 100 क्विंटल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर कर बुआई करें।
अरहर	फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड य धावनगोल्ड कीटनशी का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोक्रोटोफॉस तरल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।
बरबटी एवं कुल्थी	भुआ पिलु से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुवो को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाईलपाराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के नियंत्रण हेतु क्विनालफॉस 25 ई.सी 1.5 लिटर प्रति 500 लिटर पानी के दर से छिड़काव करे और वयस्क पिल्लुओ का नियन्त्रण हेतु ट्राईजोफॉस या डाईक्लोरोवॉस 1 लिटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था मे छिड़काव करे	पीला शिरा रोग से नियंत्रण हेतु रोगी पौधो को सावधानी से उखाडकर मिट्टी मे दवा दे और सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु मेटासिस्टॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्योर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे	
राई एंव पीला सरसों	**राई** के उन्नत प्रभेद-शिवानी , पूसा बोल्ड, एन.आर. सी. एच.वी 101, पूसा मस्टर्ड और **पीला सरसों** के उन्नत प्रभेद- एन.आर. सी.वाई. एस 05-02 की बोआई एकल फसल के रूप मे करे। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेन्टीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें ।
चना	एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काबुली वैज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्लू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (देशी वैज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि मे से किसी एक की बुआई करें या तीसी-सरसों के साथ अन्तर फसल के रूप मे लगायें । बुआई से पहले बीज को बैविस्टीन एवं थीरम को 1 : 2 के अनुपात में (बैविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात राईजोवियम कलचर या पी. एस. बी 20 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दुरी 10 सेन्टीमीटर पर बुआई करें
मसूर	मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू. बी.एल -77,एवं के. एल. एस. -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें |कतार से कतार 25 सेंन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेन्टीमीटर रखकर छोटे दानो के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बडे दानो के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें । बुआई से पहले बीज को बैविस्टीन एवं थीरम को 1 : 2 के अनुपात में (बैविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।
तीसी	उन्नत प्रभेद -प्रियम एवं टी 397, (आसिंचित अवस्था में) शेखर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में), बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर , कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर बोआई करे । रोग ग्रस्त खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीसी की खेती न करे	
टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी	1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण समृद्धि ,पूसा हाइबिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आभा,बी.टी -2 । 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर , प्राइड ऑफ इंडिया और अर्ली इमहेड । 3)फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुसा दीपावली , कुआरी , अर्ली सिंथेटिक , पूसा केतकी आदि में से किसी एक का बिचड़ा नेट शेड में ऊँची बीजस्थली बनकर उगायें । बीज डालने से पहले बीज को कार्वेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राईकोग्रामा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम , सिंगल सुपर फॉसफेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेन्टीमीटर रखकर 8 से 10 दिनो के पौधा की रोपाई करें	
सब्जी मटर	उन्नत प्रभेद -आर्केल , काशी नन्दिनी , पी.एम-113 , पुसा प्रगति एवं अजाद पी - 1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंशित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचरित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचरित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेन्टीमीटर रख कर बुआई करें।
आलू	उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुखराज (अगात) , कुफरी कंचन , कुफरी पुस्कर एवं कुफरी लालिम (मध्यम),कुफरी सिन्दुरी एवं कुफरी चिपसोना-1(पिछात), इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुवाई के लिए चयन करें |बुआई के लिए 25 से 30क्विंटल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुवाई से पहले बीज को कार्वेडाजिम या मैनकोजेब या रेडोमिल एम.जेड.1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें |खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नत्रजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम सल्फरपति हेक्टेयर के दर से बुवाई के समय डालें । नत्रजन की आधी मात्रा , फास्फोरस एवं पोटाश की पुरी मात्रा बुआई खुले कतार मे डाले	फसल की पत्तियां टेढी मेढी होने पर कालडेन 50 एस पी अत: बचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें	25 से 30 दिनों के फसल की निकाई -गुड़ाई कर 162 किलोग्राम युरिया की बची मात्रा का भुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें	
प्याज	उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार ,एन 53 ,अरका निकेतन ,अरका कल्याण ,एग्रीफाउण्ड डार्क रेड ,पुसा वाईट ,पुसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलारी रेड की बिचड़ा उगाये । बिचड़ा उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा भिगाकर तत्पश्चात कार्वेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद बिजस्थली मे तापमान बनाये रखने हेतु जल्द अंकुरण होने तक पुआल से ढके।
पपीता	रिंग स्पाट वायरस तथा मौजेक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किस्में पुसा डवार्फ या हनीडियू की रोपाई करे , रोपाई के लिए पौधो से पौधो के बीच की दुरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) ×60 (चौड़ाई) ×60 सेन्टीमिटर (गहरा) गड्ढा खोदें	गडढा में खाद की मात्रा - साड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करंज य नीम खाली 1 किलोग्राम ,डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम ,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाईलपाराथियन धुल 50 ग्राम खोदे हुए मिट्टी में मिलाकर भर दे तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें	
गोजाति	इस मौसम मे गोजाति पर खुरहा एवं चपका रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अताः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ.एम.डी. का टीकाकरण करा दे।	
चारा फसल	दुग्ध की उत्पादन में बढ़ोत्रि हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट,यू.पी.ओ-812,एवं ओ.एस-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर ,अनुसंसित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमिटर में डालकर बोआई करें	

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

क्षेत्रीये अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड

(www.bauranchi.org /www.bau-eagriculture.com)

BAU

मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- जामताड़ा

IMD

(amfudumka@gmail.com)

Ref:... 55/AAS/Dumka, Jharkhand Dated: 09.11.2018

विरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत छेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग राँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनो का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

मौसम इकाई	दिनांक				
	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षापात (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (°c)	30	30	30	30	29
न्यूनतम तापमान (°c)	17	17	16	15	15
आकाश में बादल की स्थिति	आंशिक रूप में बादल छाये रहेगें	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा
अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	56	49	45	48	44
न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	32	29	22	26	23
हवा की गति (कि.मी/घंटा)	0	5	5	4	3
हवा की दिशा	दक्षिण	उत्तर - पश्चिम	पश्चिम	उत्तर - पश्चिम	पुरब

फसल की अवस्था :-

फसल	अवस्था	फसल	अवस्था
धान	कटनी की अवस्था	लतरने वाले सब्जी	कटनी की अवस्था
चना , राई, पीला सरसों और मटर	शाकिये अवस्था	भिंडी एवं बोदी	कटनी की अवस्था
तिल,उरद एवं मुँगफली ,	कटनी की अवस्था	अदरख ,हल्दी एवं ओल	परिपक्व की अवस्था
टमाटर ,बैगन ,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी	रोपाई से लेकर कटनी की अवस्था	कुल्थी, एवं अरहर ,	शाकिये अवस्था
सरगुजा	शाकिये अवस्था से लेकर पुष्पावस्था	आलु ,प्याज और सब्जी मटर	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था
पापीता	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था	गेहूँ	बोआई हेतु खेत की तैयारी

मौसम पूर्वानुमान पर अधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनो के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एव तापमान मे कमी की सम्भावना है| किसान भाई खेत की जोताई एवं रबी फसल की बोआई करे | रबी फसल के लिए अगात प्रभेदो का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलो के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करे | किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैगन ,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलु और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरीया ,तीसी,मसूर एवं चना की खेती करे |

धान	1)धान परिपक्व की अवस्था में है ,अतः धान की कटनी करे , यदि बालियों में आभसी कन्ड रोग है तो प्रभावित बालियो को निकाल कर जल दे| खालिहान में धान झाडकर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवागे की दरारो को बन्द कर दे साथ ही साथ मालाथियान 50 ई सी का एक भाग को 300 भाग पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करे। पुरानी बोरियो का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उबाले। भंडार गृह एवं बोरियाँ के अच्छी तरह सुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पटरा या पोलीथिन की चादर बिछाकर बोरियो को दीवागे एवम छत से दुरियाँ बनाकर रखे।
गेहूँ	बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करे -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद – एच.यू.डब्लू.-468 ,डी.बी.डब्लू-39, के-9107 , के-1006, के-307 , बिरसा गेहूँ-3, एच.डी-2967, एच.डी-2733 की बुआई	2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद –सी-306, के-8027 , के-8962 ,एच.डी-2643 की बोआई करें		बुआई से पहले बीज को बीटावेक्स या वैविस्टीन या कार्वेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपेरिफास 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेन्टीमीटर खोलकर 100 क्विंटल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर कर बुआई करें।
अरहर	फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड य धावनगोल्ड कीटनशी का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोक्रोटोफॉस तरल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।
बरबटी एवं कुल्थी	भुआ पिलु से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुवो को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाईलपाराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के नियंत्रण हेतु क्विनालफॉस 25 ई.सी 1.5 लिटर प्रति 500 लिटर पानी के दर से छिड़काव करे और वयस्क पिल्लुओ का नियन्त्रण हेतु ट्राईजोफॉस या डाईक्लोरोवॉस 1 लिटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था मे छिड़काव करे	पीला शिरा रोग से नियंत्रण हेतु रोगी पौधो को सावधानी से उखाडकर मिट्टी मे दवा दे और सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु मेटासिस्टॉक्स दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्योर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे	
राई एंव पीला सरसों	**राई** के उन्नत प्रभेद-शिवानी , पूसा बोल्ड, एन.आर. सी. एच.वी 101, पूसा मस्टर्ड और **पीला सरसों** के उन्नत प्रभेद- एन.आर. सी.वाई. एस 05-02 की बोआई एकल फसल के रूप मे करे। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेन्टीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें ।
चना	एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काबुली वैज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्लू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (देशी वैज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि मे से किसी एक की बुआई करें या तीसी-सरसों के साथ अन्तर फसल के रूप मे लगायें । बुआई से पहले बीज को वेविस्टीन एवं थीरम को 1ः2 के अनुपात में (वेविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात राईजोवियम कलचर या पी. एस. वी 20 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दुरी 10 सेन्टीमीटर पर बुआई करें
मसूर	मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू. बी.एल -77,एवं के. एल. एस. -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें |कतार से कतार 25 सेंन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेन्टीमीटर रखकर छोटे दानो के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बडे दानो के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें । बुआई से पहले बीज को वेविस्टीन एवं थीरम को 1ः2 के अनुपात में (वेविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।
तीसी	उन्नत प्रभेद -प्रियम एवं टी 397, (आसिंचित अवस्था में) शेखर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में), बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर , कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर बोआई करे । रोग ग्रस्त खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीसी की खेती न करे	
टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी	1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण समृद्धि ,पूसा हाइबिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आभा,बी.टी -2 । 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर , प्राइड ऑफ इंडिया और अर्ली इमहेड । 3)फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुसा दीपावली , कुआरी , अर्ली सिंथेटिक , पूसा केतकी आदि में से किसी एक का बिचड़ा नेट शेड में ऊँची बीजस्थली बनकर उगायें । बीज डालने से पहले बीज को कार्वेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राईकोग्रामा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम , सिंगल सुपर फॉसफेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेन्टीमीटर रखकर 8 से 10 दिनो के पौधा की रोपाई करें	
सब्जी मटर	उन्नत प्रभेद -आर्केल , काशी नन्दिनी , पी.एम-113 , पुसा प्रगति एवं अजाद पी - 1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंशित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचरित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचरित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेन्टीमीटर रख कर बुआई करें।
आलू	उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुखराज (अगात) , कुफरी कंचन , कुफरी पुस्कर एवं कुफरी लालिम (मध्यम),कुफरी सिन्दुरी एवं कुफरी चिपसोना-1(पिछात), इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुवाई के लिए चयन करें |बुआई के लिए 25 से 30क्विंटल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुवाई से पहले बीज को कार्वेडाजिम या मैनकोजेब या रेडोमिल एम.जेड.1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें |खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नत्रजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम सल्फरपति हेक्टेयर के दर से बुवाई के समय डालें । नत्रजन की आधी मात्रा , फास्फोरस एवं पोटाश की पुरी मात्रा बुआई खुले कतार मे डाले	फसल की पत्तियां टेढी मेढी होने पर कालडेन 50 एस पी अत: बचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें	25 से 30 दिनों के फसल की निकाई -गुड़ाई कर 162 किलोग्राम युरिया की बची मात्रा का भुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें	
प्याज	उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार ,एन 53 ,अरका निकेतन ,अरका कल्याण ,एग्रीफाउण्ड डार्क रेड ,पुसा वाईट ,पुसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलारी रेड की बिचड़ा उगाये । बिचड़ा उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा भिगाकर तत्पश्चात कार्वेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद बिजस्थली मे तापमान बनाये रखने हेतु जल्द अंकुरण होने तक पुआल से ढके।
पपीता	रिंग स्पाट वायरस तथा मौजेक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किस्में पुसा डवार्फ या हनीडियू की रोपाई करे , रोपाई के लिए पौधो से पौधो के बीच की दुरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) ×60 (चौड़ाई) ×60 सेन्टीमिटर (गहरा) गड्ढा खोदें	गडढा में खाद की मात्रा - साड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करंज य नीम खाली 1 किलोग्राम ,डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम ,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाईलपाराथियन धुल 50 ग्राम खोदे हुए मिट्टी में मिलाकर भर दे तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें	
गोजाति	इस मौसम मे गोजाति पर खुरहा एवं चपका रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अताः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ.एम.डी. का टीकाकरण करा दे।
चारा फसल	दुग्ध की उत्पादन में बढ़ोत्रि हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट,यू.पी.ओ-812,एवं ओ.एस-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर ,अनुसंसित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमिटर में डालकर बोआई करें	

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

क्षेत्रीये अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड

(www.bauranchi.org /www.bau-eagriculture.com)

BAU

मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- कोडरमा

IMD

(amfudumka@gmail.com)

Ref:... 55/AAS/Dumka, Jharkhand Dated: 09.11.2018

विरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत छेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग राँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनो का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

मौसम इकाई	दिनांक				
	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षापात (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (°c)	31	31	31	30	30
न्यूनतम तापमान (°c)	17	18	17	17	16
आकाश में बादल की स्थिति	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा
अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	54	51	49	50	45
न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	34	29	24	28	26
हवा की गति (कि.मी/घंटा)	2	6	5	6	2
हवा की दिशा	दक्षिण - पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम	पश्चिम

फसल की अवस्था:-

फसल	अवस्था	फसल	अवस्था
धान	कटनी की अवस्था	लतरने वाले सब्जी	कटनी की अवस्था
चना , राई, पीला सरसों और मटर	शाकिये अवस्था	भिंडी एवं बोदी	कटनी की अवस्था
तिल,उरद एवं मुँगफली ,	कटनी की अवस्था	अदरख ,हल्दी एवं ओल	परिपक्व की अवस्था
टमाटर ,बैगन ,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी	रोपाई से लेकर कटनी की अवस्था	कुल्थी, एवं अरहर ,	शाकिये अवस्था
सरगुजा	शाकिये अवस्था से लेकर पुष्पावस्था	आलु ,प्याज और सब्जी मटर	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था
पापीता	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था	गेहूँ	बोआई हेतु खेत की तैयारी

मौसम पूर्वानुमान पर अधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनो के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एव तापमान मे कमी की सम्भावना है| किसान भाई खेत की जोताई एवं रबी फसल की बोआई करे | रबी फसल के लिए अगात प्रभेदो का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलो के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करे | किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैगन ,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलु और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरीया ,तीसी,मसूर एवं चना की खेती करे |

धान	1)धान परिपक्व की अवस्था में है ,अतः धान की कटनी करे , यदि बालियों में आभसी कन्ड रोग है तो प्रभावित बालियो को निकाल कर जल दे| खालिहान में धान झाडकर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवागे की दरारो को बन्द कर दे साथ ही साथ मालाथियान 50 ई सी का एक भाग को 300 भाग पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करे। पुरानी बोरियो का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उबाले। भंडार गृह एवं बोरियाँ के अच्छी तरह सुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पटरा या पोलीथिन की चादर बिछाकर बोरियो को दीवागे एवम छत से दुरियाँ बनाकर रखे।
गेहूँ	बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करे -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद – एच.यू.डब्लू.-468 ,डी.बी.डब्लू-39, के-9107 , के-1006, के-307 , बिरसा गेहूँ-3, एच.डी-2967, एच.डी-2733 की बुआई	2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद –सी-306, के-8027 , के-8962 ,एच.डी-2643 की बोआई करें		बुआई से पहले बीज को बीटावेक्स या वैविस्टीन या कार्वेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपेरिफास 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेन्टीमीटर खोलकर 100 क्विंटल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर कर बुआई करें।
अरहर	फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड य धावनगोल्ड कीटनशी का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोक्रोटोफॉस तरल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।
बरबटी एवं कुल्थी	भुआ पिलु से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुवो को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाईलपाराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के नियंत्रण हेतु क्विनालफॉस 25 ई.सी 1.5 लिटर प्रति 500 लिटर पानी के दर से छिड़काव करे और वयस्क पिल्लुओ का नियन्त्रण हेतु ट्राईजोफॉस या डाईक्लोरोवॉस 1 लिटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था मे छिड़काव करे	पीला शिरा रोग से नियंत्रण हेतु रोगी पौधो को सावधानी से उखाडकर मिट्टी मे दवा दे और सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु मेटासिस्टॉक्स दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्योर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे	
राई एंव पीला सरसों	**राई** के उन्नत प्रभेद-शिवानी , पूसा बोल्ड, एन.आर. सी. एच.वी 101, पूसा मस्टर्ड और **पीला सरसों** के उन्नत प्रभेद- एन.आर. सी.वाई. एस 05-02 की बोआई एकल फसल के रूप मे करे। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेन्टीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें ।
चना	एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काबुली बैज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्यू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (देशी बैज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि मे से किसी एक की बुआई करें या तीसी-सरसों के साथ अन्तर फसल के रूप मे लगायें । बुआई से पहले बीज को बेविस्टीन एवं थीरम को 1 ः 2 के अनुपात में (बेविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात राईजोवियम कलचर या पी. एस. बी 20 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दुरी 10 सेन्टीमीटर पर बुआई करें
मसूर	मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्यू. बी.एल -77,एवं के. एल. एस. -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें |कतार से कतार 25 सेंन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेन्टीमीटर रखकर छोटे दानो के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बडे दानो के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें । बुआई से पहले बीज को बेविस्टीन एवं थीरम को 1 ः 2 के अनुपात में (बेविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।
तीसी	उन्नत प्रभेद -प्रियम एवं टी 397, (आसिंचित अवस्था में) शेखर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में), बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर , कतार से कतार 30 सेंन्टीमीटर खोलकर बोआई करे । रोग ग्रस्त खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीसी की खेती न करे	
टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी	1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण समृद्धि ,पूसा हाइबिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आभा,बी.टी -2 । 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर , प्राइड ऑफ इंडिया और अर्ली इमहेड । 3)फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुसा दीपावली , कुआरी , अर्ली सिंथेटिक , पूसा केतकी आदि में से किसी एक का बिचड़ा नेट शेड में ऊँची बीजस्थली बनकर उगायें । बीज डालने से पहले बीज को कार्वेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राईकोग्रामा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम , सिंगल सुपर फॉसफेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेन्टीमीटर रखकर 8 से 10 दिनो के पौधा की रोपाई करें	
सब्जी मटर	उन्नत प्रभेद -आर्केल , काशी नन्दिनी , पी.एम-113 , पुसा प्रगति एवं अजाद पी - 1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंशित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचरित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचरित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेन्टीमीटर रख कर बुआई करें।
आलू	उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुखराज (अगात) , कुफरी कंचन , कुफरी पुस्कर एवं कुफरी लालिम (मध्यम),कुफरी सिन्दुरी एवं कुफरी चिपसोना-1(पिछात), इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुवाई के लिए चयन करें|बुआई के लिए 25 से 30क्विंटल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुवाई से पहले बीज को कार्बेडाजिम या मैनकोजेब या रेडोमिल एम.जेड.1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें |खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नत्रजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम सल्फरपति हेक्टेयर के दर से बुवाई के समय डालें । नत्रजन की आधी मात्रा , फास्फोरस एवं पोटाश की पुरी मात्रा बुआई खुले कतार मे डाले	फसल की पत्तियां टेढी मेढी होने पर कालडेन 50 एस पी अत: बचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें	25 से 30 दिनों के फसल की निकाई -गुड़ाई कर 162 किलोग्राम युरिया की बची मात्रा का भुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें	
प्याज	उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार ,एन 53 ,अरका निकेतन ,अरका कल्याण ,एग्रीफाउण्ड डार्क रेड ,पुसा वाईट ,पुसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलारी रेड की बिचड़ा उगाये । बिचड़ा उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा भिगाकर तत्पश्चात कार्वेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद बिजस्थली मे तापमान बनाये रखने हेतु जल्द अंकुरण होने तक पुआल से ढके।
पपीता	रिंग स्पाट वायरस तथा मौजेक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किस्में पुसा डवार्फ या हनीडियू की रोपाई करे , रोपाई के लिए पौधो से पौधो के बीच की दुरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) ×60 (चौड़ाई) ×60 सेन्टीमिटर (गहरा) गड्ढा खोदें	गडढा में खाद की मात्रा - साड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करंज य नीम खाली 1 किलोग्राम ,डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम ,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाईलपाराथियन धुल 50 ग्राम खोदे हुए मिट्टी में मिलाकर भर दे तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें	
गोजाति	इस मौसम मे गोजाति पर खुरहा एवं चपका रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अताः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ.एम.डी. का टीकाकरण करा दे।
चारा फसल	दुग्ध की उत्पादन में बढ़ोत्रि हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट,यू.पी.ओ-812,एवं ओ.एस-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर ,अनुसंसित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमिटर में डालकर बोआई करें	

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

क्षेत्रीये अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड

(www.bauranchi.org /www.bau-eagriculture.com)

BAU

मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- साहिबगंज

IMD

(amfudumka@gmail.com)

Ref:... 55/AAS/Dumka, Jharkhand Dated: 09.11.2018

विरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत छेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग राँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनो का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

मौसम इकाई	दिनांक				
	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षापात (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (°c)	30	30	30	30	29
न्यूनतम तापमान (°c)	17	18	17	17	16
आकाश में बादल की स्थिति	आंशिक रूप में बादल छाये रहेगें	आंशिक रूप में बादल छाये रहेगें	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा
अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	57	51	48	49	48
न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	36	31	25	28	26
हवा की गति (कि.मी/घंटा)	0	4	4	2	4
हवा की दिशा	दक्षिण	पश्चिम	पश्चिम	उत्तर - पश्चिम	उत्तर - पुरब

फसल की अवस्था :-

फसल	अवस्था	फसल	अवस्था
धान	कटनी की अवस्था	लतरने वाले सब्जी	कटनी की अवस्था
चना , राई, पीला सरसों और मटर	शाकिये अवस्था	भिंडी एवं बोदी	कटनी की अवस्था
तिल,उरद एवं मुँगफली ,	कटनी की अवस्था	अदरख ,हल्दी एवं ओल	परिपक्व की अवस्था
टमाटर ,बैगन ,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी	रोपाई से लेकर कटनी की अवस्था	कुल्थी, एवं अरहर ,	शाकिये अवस्था
सरगुजा	शाकिये अवस्था से लेकर पुष्पावस्था	आलु ,प्याज और सब्जी मटर	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था
पापीता	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था	गेहूँ	बोआई हेतु खेत की तैयारी

मौसम पूर्वानुमान पर अधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनो के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एव तापमान मे कमी की सम्भावना है| किसान भाई खेत की जोताई एवं रबी फसल की बोआई करे | रबी फसल के लिए अगात प्रभेदो का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलो के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करे | किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैगन ,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलु और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरीया ,तीसी,मसूर एवं चना की खेती करे |

धान	1)धान परिपक्व की अवस्था में है ,अतः धान की कटनी करे , यदि बालियों में आभसी कन्ड रोग है तो प्रभावित बालियो को निकाल कर जल दे| खालिहान में धान झाडकर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवागे की दरारो को बन्द कर दे साथ ही साथ मालाथियान 50 ई सी का एक भाग को 300 भाग पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करे। पुरानी बोरियो का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उबाले। भंडार गृह एवं बोरियाँ के अच्छी तरह सुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पटरा या पोलीथिन की चादर बिछाकर बोरियो को दीवागे एवम छत से दुरियाँ बनाकर रखे।
गेहूँ	बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करे -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद – एच.यू.डब्लू.-468 ,डी.बी.डब्लू-39, के-9107 , के-1006, के-307 , बिरसा गेहूँ-3, एच.डी-2967, एच.डी-2733 की बुआई	2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद –सी-306, के-8027 , के-8962 ,एच.डी-2643 की बोआई करें		बुआई से पहले बीज को बीटावेक्स या वैविस्टीन या कार्वेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपेरिफास 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेन्टीमीटर खोलकर 100 क्विंटल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर कर बुआई करें।
अरहर	फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड य धावनगोल्ड कीटनशी का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोक्रोटोफॉस तरल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।
बरबटी एवं कुल्थी	भुआ पिलु से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुवो को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाईलपाराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के नियंत्रण हेतु क्विनालफॉस 25 ई.सी 1.5 लिटर प्रति 500 लिटर पानी के दर से छिड़काव करे और वयस्क पिल्लुओ का नियन्त्रण हेतु ट्राईजोफॉस या डाईक्लोरोवॉस 1 लिटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था मे छिड़काव करे	पीला शिरा रोग से नियंत्रण हेतु रोगी पौधो को सावधानी से उखाडकर मिट्टी मे दवा दे और सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु मेटासिस्टॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्योर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे	
राई एंव पीला सरसों	**राई** के उन्नत प्रभेद-शिवानी , पूसा बोल्ड, एन.आर. सी. एच.बी 101, पूसा मस्टर्ड और **पीला सरसों** के उन्नत प्रभेद- एन.आर. सी.वाई. एस 05-02 की बोआई एकल फसल के रूप मे करे। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेन्टीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें ।
चना	एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काबुली वैज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्लू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (देशी वैज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि मे से किसी एक की बुआई करें या तीसी-सरसों के साथ अन्तर फसल के रूप मे लगायें । बुआई से पहले बीज को वेविस्टीन एवं थीरम को 1ः2 के अनुपात में (वेविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात राईजोवियम कलचर या पी. एस. बी 20 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दुरी 10 सेन्टीमीटर पर बुआई करें
मसूर	मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू. बी.एल -77,एवं के. एल. एस. -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें |कतार से कतार 25 सेंन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेन्टीमीटर रखकर छोटे दानो के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बडे दानो के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें । बुआई से पहले बीज को वेविस्टीन एवं थीरम को 1ः2 के अनुपात में (वेविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।
तीसी	उन्नत प्रभेद -प्रियम एवं टी 397, (आसिंचित अवस्था में) शेखर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में), बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर , कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर बोआई करे । रोग ग्रस्त खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीसी की खेती न करे	
टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी	1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण समृद्धि ,पूसा हाइबिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आभा,बी.टी -2 । 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर , प्राइड ऑफ इंडिया और अर्ली इमहेड । 3)फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुसा दीपावली , कुआरी , अर्ली सिंथेटिक , पूसा केतकी आदि में से किसी एक का बिचड़ा नेट शेड में ऊँची बीजस्थली बनकर उगायें । बीज डालने से पहले बीज को कार्वेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राईकोग्रामा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम , सिंगल सुपर फॉसफेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेन्टीमीटर रखकर 8 से 10 दिनो के पौधा की रोपाई करें	
सब्जी मटर	उन्नत प्रभेद -आर्केल , काशी नन्दिनी , पी.एम-113 , पुसा प्रगति एवं अजाद पी - 1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंशित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचरित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचरित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेन्टीमीटर रख कर बुआई करें।
आलू	उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुखराज (अगात) , कुफरी कंचन , कुफरी पुस्कर एवं कुफरी लालिम (मध्यम),कुफरी सिन्दुरी एवं कुफरी चिपसोन-1(पिछात), इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुवाई के लिए चयन करें|बुआई के लिए 25 से 30क्विंटल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुवाई से पहले बीज को कार्वेडाजिम या मैनकोजेब या रेडोमिल एम.जेड.1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें |खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नत्रजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम सल्फरपति हेक्टेयर के दर से बुवाई के समय डालें । नत्रजन की आधी मात्रा , फास्फोरस एवं पोटाश की पुरी मात्रा बुआई खुले कतार मे डाले	फसल की पत्तियां टेढी मेढी होने पर कालडेन 50 एस पी अत: बचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें	25 से 30 दिनों के फसल की निकाई -गुड़ाई कर 162 किलोग्राम युरिया की बची मात्रा का भुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें	
प्याज	उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार ,एन 53 ,अरका निकेतन ,अरका कल्याण ,एग्रीफाउण्ड डार्क रेड ,पुसा वाईट ,पुसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलारी रेड की बिचड़ा उगाये । बिचड़ा उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा भिगाकर तत्पश्चात कार्वेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद बिजस्थली मे तापमान बनाये रखने हेतु जल्द अंकुरण होने तक पुआल से ढके।
पपीता	रिंग स्पाट वायरस तथा मौजेक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किस्में पुसा डवार्फ या हनीडियू की रोपाई करे , रोपाई के लिए पौधो से पौधो के बीच की दुरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) ×60 (चौड़ाई) ×60 सेन्टीमिटर (गहरा) गड्ढा खोदें	गडढा में खाद की मात्रा - साड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करंज य नीम खाली 1 किलोग्राम ,डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम ,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाईलपाराथियन धुल 50 ग्राम खोदे हुए मिट्टी में मिलाकर भर दे तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें	
गोजाति	इस मौसम मे गोजाति पर खुरहा एवं चपका रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अताः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ.एम.डी. का टीकाकरण करा दे।	
चारा फसल	दुग्ध की उत्पादन में बढ़ोत्रि हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट,यू.पी.ओ-812,एवं ओ.एस-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर ,अनुसंसित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमिटर में डालकर बोआई करें	

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

क्षेत्रीये अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वाविद्यालय) दुमका,झारखण्ड

(www.bauranchi.org /www.bau-eagriculture.com)

BAU — IMD

मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- गोडडा

(amfudumka@gmail.com)

Ref:... 55/AAS/Dumka, Jharkhand — Dated: 09.11.2018

विरसा कृषि विश्वाविद्यालय के अन्तर्गत छेत्रीय अनुसंधान केन्द्र,दुमका को भारतीय मौसम विभाग राँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनो का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

मौसम इकाई	दिनांक				
	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षापात (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (°c)	30	30	30	30	29
न्यूनतम तापमान (°c)	17	18	17	17	16
आकाश में बादल की स्थिति	आंशिक रूप में बादल छाये रहेगें	आंशिक रूप में बादल छाये रहेगें	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा
अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	57	51	48	49	48
न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	36	31	25	28	26
हवा की गति (कि.मी/घंटा)	0	4	4	2	4
हवा की दिशा	दक्षिण	पश्चिम	पश्चिम	उत्तर - पश्चिम	उत्तर - पुरब

फसल की अवस्था :-

फसल	अवस्था	फसल	अवस्था
धान	कटनी की अवस्था	लतरने वाले सब्जी	कटनी की अवस्था
चना , राई, पीला सरसों और मटर	शाकिये अवस्था	भिंडी एवं बोदी	कटनी की अवस्था
तिल,उरद एवं मुँगफली ,	कटनी की अवस्था	अदरख ,हल्दी एवं ओल	परिपक्व की अवस्था
टमाटर ,बैगन ,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी	रोपाई से लेकर कटनी की अवस्था	कुल्थी, एवं अरहर ,	शाकिये अवस्था
सरगुजा	शाकिये अवस्था से लेकर पुष्पावस्था	आलु ,प्याज और सब्जी मटर	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था
पापीता	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था	गेहूँ	बोआई हेतु खेत की तैयारी

मौसम पूर्वानुमान पर अधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनो के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एव तापमान मे कमी की सम्भावना है| किसान भाई खेत की जोताई एवं रबी फसल की बोआई करे | रबी फसल के लिए अगात प्रभेदो का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलो के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करे | किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैगन ,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलु और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरिया ,तीसी,मसूर एवं चना की खेती करे |

धान	1)धान परिपक्व की अवस्था में है ,अतः धान की कटनी करे , यदि बालियों में आभसी कन्ड रोग है तो प्रभावित बालियो को निकाल कर जल दे| खालिहान में धान झाडकर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवागे की दरारो को बन्द कर दे साथ ही साथ मालाथियान 50 ई सी का एक भाग को 300 भाग पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करे। पुरानी बोरियो का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उबाले। भंडार गृह एवं बोरियाँ के अच्छी तरह सुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पटरा या पोलीथिन की चादर बिछाकर बोरियो को दीवागे एवम छत से दुरियाँ बनाकर रखे।
गेहूँ	बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करे -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद – एच.यू.डब्लू.-468 ,डी.बी.डब्लू-39, के-9107 , के-1006, के-307 , बिरसा गेहूँ-3, एच.डी-2967, एच.डी-2733 की बुआई	2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद –सी-306, के-8027 , के-8962 ,एच.डी-2643 की बोआई करें		बुआई से पहले बीज को बीटावेक्स या वैविस्टीन या कार्वेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपेरिफास 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेन्टीमीटर खोलकर 100 क्विंटल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर कर बुआई करें।
अरहर	फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्ब या स्पिनोसेड य धावनगोल्ड कीटनशी का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोक्रोटोफॉस तरल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।
बरबटी एवं कुल्थी	भुआ पिलु से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुवो को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाईलपाराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के नियंत्रण हेतु क्विनालफॉस 25 ई.सी 1.5 लिटर प्रति 500 लिटर पानी के दर से छिड़काव करे और वयस्क पिल्लुओ का नियन्त्रण हेतु ट्राईजोफॉस या डाईक्लोरोवॉस 1 लिटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था मे छिड़काव करे	पीला शिरा रोग से नियंत्रण हेतु रोगी पौधो को सावधानी से उखाडकर मिट्टी मे दवा दे और सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु मेटासिस्टॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्योर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे	
राई एंव पीला सरसों	**राई** के उन्नत प्रभेद-शिवानी , पूसा बोल्ड, एन.आर. सी. एच.वी 101, पूसा मस्टर्ड और **पीला सरसों** के उन्नत प्रभेद- एन.आर. सी.वाई. एस 05-02 की बोआई एकल फसल के रूप मे करे। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेन्टीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें ।
चना	एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काबुली बैज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्यू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (देशी बैज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि मे से किसी एक की बुआई करें या तीसी-सरसों के साथ अन्तर फसल के रूप मे लगायें । बुआई से पहले बीज को बेविस्टीन एवं थीरम को 1 ः 2 के अनुपात में (बेविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात राईजोवियम कलचर या पी. एस. बी 20 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दुरी 10 सेन्टीमीटर पर बुआई करें
मसूर	मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू. बी.एल -77,एवं के. एल. एस. -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें |कतार से कतार 25 सेंन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेन्टीमीटर रखकर छोटे दानो के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बडे दानो के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें । बुआई से पहले बीज को बेविस्टीन एवं थीरम को 1 ः 2 के अनुपात में (बेविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।
तीसी	उन्नत प्रभेद -प्रियम एवं टी 397, (आसिंचित अवस्था में) शेखर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में), बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर , कतार से कतार 30 सेंन्टीमीटर खोलकर बोआई करे । रोग ग्रस्त खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीसी की खेती न करे	
टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी	1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण समृद्धि ,पूसा हाइबिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आभा,बी.टी -2 । 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर , प्राइड ऑफ इंडिया और अर्ली इमहेड । 3)फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुसा दीपावली , कुआरी , अर्ली सिंथेटिक , पूसा केतकी आदि में से किसी एक का बिचड़ा नेट शेड में ऊँची बीजस्थली बनकर उगायें । बीज डालने से पहले बीज को कार्वेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राईकोग्रामा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) उँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम , सिंगल सुपर फॉसफेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेन्टीमीटर रखकर 8 से 10 दिनो के पौधा की रोपाई करें	
सब्जी मटर	उन्नत प्रभेद -आर्केल , काशी नन्दिनी , पी.एम-113 , पुसा प्रगति एवं अजाद पी - 1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंशित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचरित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचरित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेन्टीमीटर रख कर बुआई करें।
आलू	उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुखराज (अगात) , कुफरी कंचन , कुफरी पुस्कर एवं कुफरी लालिम (मध्यम),कुफरी सिन्दुरी एवं कुफरी चिपसोना-1(पिछात), इत्यादि की बुआई करें। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुवाई के लिए चयन करें|बुआई के लिए 25 से 30क्विंटल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुवाई से पहले बीज को कार्वेडाजिम या मैनकोजेब या रेडोमिल एम.जेड.1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे घंटा उपचारित कर बुआई करें |खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नत्रजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम सल्फरपति हेक्टेयर के दर से बुवाई के समय डालें । नत्रजन की आधी मात्रा , फास्फोरस एवं पोटाश की पुरी मात्रा बुआई खुले कतार मे डाले	फसल की पत्तियां टेढी मेढी होने पर कालडेन 50 एस पी अत: बचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें	25 से 30 दिनों के फसल की निकाई -गुड़ाई कर 162 किलोग्राम युरिया की बची मात्रा का भुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें	
प्याज	उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार ,एन 53 ,अरका निकेतन ,अरका कल्याण ,एगीफाउण्ड डार्क रेड ,पुसा वाईट ,पुसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलारी रेड की बिचड़ा उगाये । बिचड़ा उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा भिगाकर तत्पश्चात कार्वेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद बिजस्थली मे तापमान बनाये रखने हेतु जल्द अंकुरण होने तक पुआल से ढके।
पपीता	रिंग स्पाट वायरस तथा मौजेक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किस्में पुसा डवार्फ या हनीडियू की रोपाई करे , रोपाई के लिए पौधो से पौधो के बीच की दुरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) ×60 (चौड़ाई) ×60 सेन्टीमिटर (गहरा) गड्ढा खोदें	गडढा में खाद की मात्रा - साड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करंज य नीम खाली 1 किलोग्राम ,डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम ,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाईलपारायिथन धुल 50 ग्राम खोदे हुए मिट्टी में मिलाकर भर दे तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें	
गोजाति	इस मौसम मे गोजाति पर खुरहा एवं चपका रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अताः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ.एम.डी. का टीकाकरण करा दे।	
चारा फसल	दुग्ध की उत्पादन में बढ़ोत्रि हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट,यू.पी.ओ-812,एवं ओ.एस-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर ,अनुसंसित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमिटर में डालकर बोआई करें	

(राजू लिन्डा) (डॉ. ए. वदूद) (डॉ.पी. बी.साहा)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

क्षेत्रीये अनुसंधान केन्द्र (बिरसा कृषि विश्वविद्यालय) दुमका,झारखण्ड

(www.bauranchi.org /www.bau-eagriculture.com)

BAU | IMD

मौसम खेती परामर्श बुलेटीन, जिला- पाकुड़

(amfudumka@gmail.com)

Ref:... 55/AAS/Dumka, Jharkhand | Dated: 09.11.2018

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के अन्तर्गत छेत्रीय अनुसंधान केन्द,दुमका को भारतीय मौसम विभाग राँची, भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय से प्राप्त अगले पाँच दिनो का मौसम पूर्वानुमान |

भारतीय मौसम विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान

मौसम इकाई	दिनांक				
	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षापात (मिलीमीटर)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (°c)	30	30	30	30	29
न्यूनतम तापमान (°c)	17	18	17	17	16
आकाश में बादल की स्थिति	आंशिक रूप में बादल छाये रहेगें	आंशिक रूप में बादल छाये रहेगें	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा	आकाश साफ रहेगा
अधिकतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	57	51	48	49	48
न्यूनतम सपेक्षितआर्द्रता (%)	36	31	25	28	26
हवा की गति (कि.मी/घंटा)	0	4	4	2	4
हवा की दिशा	दक्षिण	पश्चिम	पश्चिम	उत्तर - पश्चिम	उत्तर - पुरब

फसल की अवस्था:-

फसल	अवस्था	फसल	अवस्था
धान	कटनी की अवस्था	लतरने वाले सब्जी	कटनी की अवस्था
चना , राई, पीला सरसों और मटर	शाकिये अवस्था	भिंडी एवं बोदी	कटनी की अवस्था
तिल,उरद एवं मुँगफली ,	कटनी की अवस्था	अदरख ,हल्दी एवं ओल	परिपक्व की अवस्था
टमाटर ,बैगन ,पत्तागोभी, एवं फूलगोभी	रोपाई से लेकर कटनी की अवस्था	कुल्थी, एवं अरहर ,	शाकिये अवस्था
सरगुजा	शाकिये अवस्था से लेकर पुष्पावस्था	आलु ,प्याज और सब्जी मटर	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था
पापीता	रोपाई से लेकर शाकिये अवस्था	गेहूँ	बोआई हेतु खेत की तैयारी

मौसम पूर्वानुमान पर अधारित कृषि सलाह - अगले पाँच दिनो के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार आकाश साफ रहने से लेकर आंशिक रूप में बादल छाये रहने एव तापमान मे कमी की सम्भावना है| किसान भाई खेत की जोताई एवं रबी फसल की बोआई करे | रबी फसल के लिए अगात प्रभेदो का चयन कर साथ ही साथ सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता एवं रबी फसलो के जल की आवश्यकता के अनुसार खेती करे | किसान भाई के पास 3 से 5 सिंचाई के लिए पानी है तो गेहूँ,टमाटर,बैगन ,पत्तागोभी एवं फूलगोभी राई, पीला सरसों, आलु और सब्जी मटर की खेती करें तथा 2 से 3 सिंचाई के लिए पानी रहने पर तोरीया ,तीसी,मसूर एवं चना की खेती करे |

धान	1)धान परिपक्व की अवस्था में है ,अतः धान की कटनी करे , यदि बालियाँ में आभसी कन्ड रोग है तो प्रभावित बालियो को निकाल कर जल दे| खलिहान में धान झाडकर दानों को अच्छी तरह सुखाकर 8 से 10 प्रतिशत नमी रहने पर भंडारण करें। अनाज का भण्डारण से पहले भंडार गृह का अच्छी तरह सफाई कर फर्श एवं दीवारो की दरारो को बन्द कर दे साथ ही साथ मालाथियान 50 ई सी का एक भाग को 300 भाग पानी मे घोल बनाकर छिड़काव करे। पुरानी बोरियो का इस्तेमाल करने से पहले आधा घंटा पानी उबाले। भंडार गृह एवं बोरियाँ के अच्छी तरह सुख जाने पर अनाज भरकर, फर्श में लकड़ी का पटरा या पोलीथिन की चादर बिछाकर बोरियो को दीवारो एवम छत से दुरियाँ बनाकर रखे।
गेहूँ	बीज के लिए उन्नत प्रभेद की व्यवस्था करे -1)सिंचाई के लिए प्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद – एच.यू.डब्लू.-468 ,डी.बी.डब्लू-39, के-9107 , के-1006, के-307 , बिरसा गेहूँ-3, एच.डी-2967, एच.डी-2733 की बुआई	2) सिंचाई के लिए अप्रयाप्त मात्रा मे पानी की व्यवस्था है तो गेहूँ के उन्नत प्रभेद –सी-306, के-8027 , के-8962 ,एच.डी-2643 की बोआई करें ||बुआई से पहले बीज को बीटावेक्स या बैविस्टीन या कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से तथा 6 घंटा पश्चात क्लोरपेरिफासँ 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 50 किलोग्राम बीज का बीजोपचार कर तथा कतार से कतार दूरी 18 से 20 सेन्टीमीटर खोलकर 100 क्विंटल सड़ी गोबर खाद एवं सिंचित अवस्था में यूरिया की आधी मात्रा 43 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर कर बुआई करें।
अरहर	फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर पहला छिड़काव इण्डोक्साकार्व या स्पिनोसेड य धावनगोल्ड कीटनशी का 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर तथा दुसरा छिड़काव 10 से 15 दिनों के बाद मोनोक्रोटोफॉस तरल 1.5 से 2.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर का छिड़काव करें।
बरवटी एवं कुल्थी	भुआ पिलु से बचाव हेतु अण्डे एवं नवजात शिशुवो को एकत्रित कर नष्ट कर दें साथ ही साथ मिथाईलपाराथियोन धुल 25 से 30 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से भुरकाव करें तथा छोटे पिल्लु के नियंत्रण हेतु क्विनालफॉस 25 ई.सी 1.5 लिटर प्रति 500 लिटर पानी के दर से छिड़काव करे और वयस्क पिल्लुओ का नियन्त्रण हेतु ट्राईजोफॉस या डाईक्लोरोवॉस 1 लिटर लीटर प्रति हेक्टेयर के दर से पुष्प अवस्था मे छिड़काव करे	पीला शिरा रोग से नियंत्रण हेतु रोगी पौधो को सावधानी से उखाडकर मिट्टी मे दवा दे और सफेद मक्खी के नियंत्रण हेतु मेटासिस्टॉक दवा 1.5 मिलीलीटर या ट्राइक्योर 5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करे|
राई एंव पीला सरसों	**राई** के उन्नत प्रभेद-शिवानी , पूसा बोल्ड, एन.आर. सी. एच.बी 101, पूसा मस्टर्ड और **पीला सरसों** के उन्नत प्रभेद- एन.आर. सी.वाई. एस 05-02 की बोआई एकल फसल के रूप मे करे। खेत तैयार कर कतार से कतार 30 सेंन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 35 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 150 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 27 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 10 सेंन्टीमीटर रखकर 2 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें ।
चना	एकल फसल के रूप में काक -2,आई.एच.के-94-134 (काबुली बिज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़),के डब्ल्यू.आर - 108, के.पी.जी-59,पूसा 372 (देशी बिज दर 34 किलोग्राम प्रति एकड़) आदि मे से किसी एक की बुआई करें या तीसी-सरसों के साथ अन्तर फसल के रूप मे लगायें । बुआई से पहले बीज को वैविस्टीन एवं थीरम को 1 ः 2 के अनुपात में (वैविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 2 से 3 घंटा छाया में सुखाने के पश्चात राईजोबियम कलचर या पी. एस. बी 20 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर 3 से 4 घंटा बाद बुआई करें। कतार से कतार 30 सेंन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद यूरिया की आधी मात्रा 22 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 125 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 17 किलोग्राम और फॉसफोजिप्सम 53 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर पौधे से पौधे की दुरी 10 सेन्टीमीटर पर बुआई करें
मसूर	मसूर के उन्नत प्रभेद - यू.एच.एल-57, डब्ल्यू. बी.एल -77,एवं के. एल. एस. -218 आदि में से किसी एक की बुआई करें।कतार से कतार 25 सेंन्टीमीटर खोलकर रसायनिक खाद डी.ए.पी.40 किलोग्राम, म्यूरिएट ऑफ पोटाश 14 किलोग्राम एवं फास्फोजिप्सम 50 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से डालकर एवं बीज से बीज की दूरी 5 सेंन्टीमीटर रखकर छोटे दानो के लिए बीजदर 12 किलोग्राम एवं बडे दानो के लिए बीजदर 20 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर से बुआई करें । बुआई से पहले बीज को वैविस्टीन एवं थीरम को 1 ः 2 के अनुपात में (वैविस्टीन 1 ग्राम एवं थीरम 2 ग्राम) प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित करें।
तीसी	उन्नत प्रभेद -प्रियम एवं टी 397, (आसिंचित अवस्था में) शेखर एवं दीव्या (सिंचित अवस्था में), बीजदर 8 से 10 किलोग्राम बीज प्रति एकड़ के दर , कतार से कतार 30 सेंन्टीमीटर खोलकर बोआई करे । रोग ग्रस्त खेत में 2 से 3 वर्ष तक तीसी की खेती न करे	
टमाटर पत्तागोभी फूलगोभी	1)टमाटर के उन्नत प्रभेद- स्वर्ण समपदा, स्वर्ण समृद्धि ,पूसा हाइबिड -1, सुरक्षा (संकर) तथा स्वर्ण लालिमा,अरका आभा,बी.टी -2 । 2) पत्तागोभी के उन्नत प्रभेद-गोल्डन एकर , प्राइड ऑफ इंडिया और अर्ली ड्रमहेड । 3)फूलगोभी के उन्नत प्रभेद -पुसा दीपावली , कुआरी , अर्ली सिंथेटिक , पूसा केतकी आदि में से किसी एक का बिचड़ा नेट शेड में ऊँची बीजस्थली बनकर उगायें । बीज डालने से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 2 ग्राम या ट्राईकोग्रामा 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचारित कर बुआई करें। 4) ऊँची जमीन की तीन से चार जुताई करने के पश्चात्त खेत तैयार करते समय 25 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु यूरिया की आधी मात्रा 130 किलोग्राम , सिंगल सुपर फॉसफेट 375 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 100 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के दर से डालकर एवं पौधा से पौधा की दूरी 60 सेंन्टीमीटर रखकर 8 से 10 दिनो के पौधा की रोपाई करें	
सब्जी मटर	उन्नत प्रभेद -आर्केल , काशी नन्दिनी , पी.एम-113 , पुसा प्रगति एवं अजाद पी - 1 की बुआई करें। 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर बुआई के लिए अनुसंशित मात्रा में सड़ी गोबर खाद 10 टन, यूरिया 30 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 200 किलोग्राम,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 26 किलोग्राम एवं बीज को कैप्टान या थिरम 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से उपचरित करने के पश्चात जीवाणु खाद उपचरित कर कतार से कतार 30 से 45 सेंटीमीटर खोलकर तथा बीज से बीज की दूरी 10 सेंन्टीमीटर रख कर बुआई करें।
आलू	उन्नत प्रभेद-कुफरी अशोका एवं कुफरी पुखराज (अगात) , कुफरी कंचन , कुफरी पुस्कर एवं कुफरी लालिम (मधयम),कुफरी सिन्दुरी एवं कुफरी चिपसोन-1 (पिछात), इत्यादि की बुआई करे। खेत तैयारकर 25 से 30 ग्राम आकार का स्वस्थ अंकुरित कन्द बुवाई के लिए चयन करें।बुआई के लिए 25 से 30क्विंटल बीज प्रति हेक्टेयर के दर से लेकर बुवाई से पहले बीज को कार्बेडाजिम या मैनकोजेब या रेडोमिल एम.जेड.1.5 से 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर आधे धंटा उपचारित कर बुआई करें ।खेत तैयार करते समय 40 टन प्रति हेक्टेयर के दर से गोबर खाद डालकर अंतिम जुताई कर पाटा चला दें। अधिक उत्पादन हेतु नत्रजन 150 किलोग्राम तथा पोटाश 100 किलोग्राम 120 किलोग्राम फास्फोरस एवं 24 किलोग्राम सल्फरप्रति हेक्टेयर के दर से बुवाई के समय डालें । नत्रजन की आधी मात्रा , फास्फोरस एवं पोटाश की पुरी मात्रा बुआई खुले कतार मे डाले | फसल की पत्तियां टेढी मेढी होने पर कालडेन 50 एस पी अत: बचाव 1 से 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के दर से घोल बनाकर 15 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करें | 25 से 30 दिनों के फसल की निकाई -गुड़ाई कर 162 किलोग्राम युरिया की बची मात्रा का भुरकाव प्रति हेक्टर की दर से करें	
प्याज	उन्नत प्रभेद -पूसा रेड, पूसा रत्नार ,एन 53 ,अरका निकेतन ,अरका कल्याण ,एग्रीफाउण्ड डार्क रेड ,पुसा वाईट ,पुसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना वाईट, बेलारी रेड की बिचड़ा उगाये । बिचड़ा उगाने के लिए बीजस्थली में सड़ी गोबर खाद का प्रयोग करें तथा बुआई से पहले बीज का 8 से 10 घंटा भिंगाकर तत्पश्चात कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत, 2 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज के दर से बीजोपचार कर ले एवं बुआई के बाद बिजस्थली मे तापमान बनाये रखने हेतु जल्द अंकुरण होने तक पुआल से ढके।
पपीता	रिंग स्पाट वायरस तथा मौजेक वायरस से बचाव के लिए बीज को सितम्बर माह में नर्सरी में लगायें और अक्टूबर-नवम्बर में रोपाई करें। इसके उन्नत किस्में पुसा डवार्फ या हनीडियू की रोपाई करे , रोपाई के लिए पौधो से पौधो के बीच की दुरी 1.8 फीट रखकर 60 (लम्बाई) ×60 (चौड़ाई) ×60 सेन्टीमिटर (गहरा) गड्ढा खोदें |गड्ढा में खाद की मात्रा - साड़ी गोबर की खाद 7 किलोग्राम,करंज य नीम खाली 1 किलोग्राम ,डी.ए.पी. 1.5 किलोग्राम ,म्यूरिएट ऑफ पोटाश 500 ग्राम एवं मिथाईलपाराथियन धुल 50 ग्राम खोदे हुए मिट्टी में मिलाकर भर दे तथा 15 दिनों बाद रोपाई करें	
गोजाति	इस मौसम मे गोजाति पर खुरहा एवं चपका रोग का प्रकोप बहुत अधिक होता है। अतः जो किसान को सलाह दी जाती है कि इस रोग से बचाव हेतु जानवर को पशु चिकित्सक से सलाह लेकर एफ.एम.डी. का टीकाकरण करा दे।
चारा फसल	दुग्ध की उत्पादन में बढ़ोत्रि हेतु जई के उन्नत प्रभेद केंट,यू.पी.ओ-812,एवं ओ.एस-6 की खेती 40 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से बीज लेकर ,अनुसंसित रसायनिक खाद की मात्रा यूरिया 86 किलोग्राम, सिंगल सुपर फॉसफेट 100 किलोग्राम एवं म्यूरिएट ऑफ पोटाश 13 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से कतार से कतार 20 सेंटीमिटर में डालकर बोआई करे	

(राजू लिन्डा) | (डॉ. ए. वदूद) | (डॉ.पी. बी.साहा)

GRAMIN KRISHI MAUSAM SEWA
BIRSA AGRICULTURAL UNIVERSITY
(ZONAL RESEARCH STATION, DARISAI)

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, दारीसाई को भारत मौसम विभाग, राँची द्वारा भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मन्त्रालय, नई दिल्ली, से प्राप्त जानकारी के अनुसार जिला पूर्वी सिंहभूम तथा उसके आसपास के क्षेत्रों के लिए अगले 120 घण्टों के दौरान मौसम पूर्वानुमान

एवम्

मौसम खेती परामर्श बुलेटिन

अगले पॉच दिनों के लिए मौसम पूर्वानुमान (14–18 नवम्बर 2018)

Ref :13/2018/GKMS/Darisai(92)
Date: 13.11.2018
Web : bauranchi.org

Ph No. –9334729740(m)
binodranchi@gmail.com

मौसम इकाई / दिनांक	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षा (मिलीमीटर)	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.
अधिकतम तापमान (⁰C)	31	31	31	31	31
न्यूनतम तापमान (⁰C)	18	17	17	16	16
आकाश मे बादल की स्थिति	छिट–पुट बादल	घने बादल	धूप	धूप	धूप
अधिकतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत्)	89	85	89	89	88
न्यूनतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत्)	36	31	28	30	27
हवा की गति (किलोमीटर प्रतिघंटा)	4	7	7	5	5
हवा बहाव की दिशा	पश्चिम्–उत्तर से	पश्चिम् से	पश्चिम् से	पश्चिम् से	दक्षिण–पूर्व से

उपरोक्त मौसम पूर्वानुमान पर आधारित किसान भाईयों के लिए कृषि सामयिक सलाह

मौसम आधारित विशेष सलाह

संकेत– मौसम साफ रहने की पूर्ण सम्भावना है। सिंचाई दवा का छिड़काव एवमु खाद का भुरकाव कर सकते है। SPI value (1 to 0.49 मध्यम नमी) दिनांक 07.11.2018 तक के अनूसार मृदा में नमी बरकरा है। मृदा में मौजूद नमी की उपयोगता एवम् दोहरे फसल लाभ के लिए चना, तीसी , खेसाड़ी एवम् बरसीम चारा फसल को पैरा या रीले फसल प्रणाली से लें। बीज दर समान्य से 50 प्रतिशत् ज्यादा लें यानी की समान्य 1.5 गुना लें। दो– तीन सिंचाई की व्यवस्था होने से हीं सरसो ़मटर एवम् चना तथा एक से दो सिंचाई की व्यवस्था होने से तीसी ले। अभी असिंचित गेंहूँ मध्यम जमीन मे धान कटाई के बाद या खली पड़े खेंत में बुआई कर सके है। उन्नत किस्म सी 306, के 8027, एच डी आर 77, के 8962 इत्यादि का व्यवहार उपचारति कर हीं उपयोग करें। NDVI value (.25 to 0.45) दिनांक 04.11.2018 तक के अनूसार रबी फसल की बढ़त अच्छी एवम् बिना तनाव साथ ही साथ अच्छे फैलाव में है। NDVI value (.55 to 0.65) दिनांक 04.11.2018 तक के अनूसार मध्यम एवम् नीचली जमीन में धान परिपक्व होने एवम् प्रजनन अवस्था में है।

ऊपरी, मध्यम एवम् निचली जमीन खेती : ऊपरी जमीन में लिए गए कुल्थी, सरगुजा, लोबीया. राइस बिन एवम् कुसुम इत्यादी में निकाई–गुड़ाई के बाद हल्की सिंचाई करें। **मध्यम एवम् निचली जमीन** में वभिन्न क्षेत्रों में धान दुग्धा या दाने सक्त होने की अवस्था में है एवम् इसका सीधा प्रभाव उपज पर पड़ता है। अगले पॉचों दिन **आसमान साफं रहने की** संभावना है। इस अवस्था में गंधी बग कीटों का प्रकोप बढ़ने की सम्भावना एवम् प्रकोप होने पर दानें बदरंग होते दिखेंगें। अतः इसके रोक थाम हेतु मिथाइल पाराथीयॉन 2 प्रतिशत् धूल या क्लोरपायरीफास 4 प्रतिशत् या इमीडाक्लोरपिड धूल 8–10 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से सुबह के वक्त या शाम सूर्यास्त से पूर्व भुरकाव करें । **अन्य सुझाव–** दूध भरने एवम् दाने सक्त होने तक संवेदनशील अवस्था होती है। अतः धान की जड. में नमी नितांत आवश्यक है। इस अवस्था में नमी की कमी वाले खेत में आहर, नाहर, नदी, कुऑ इत्यादि या किसी भी जल स्रोत से कम से कम एक सिंचाई अवश्य कोशिश करें। बाली बनने की अवस्था में यूरिया का उपरिवेशन करें एवम् कीट–व्याधी के प्रति सजग रहें। धान में चूहों का प्रकोप हो, तो मेढ़ों को पतला कर छेदों के समीप धनात्मक आकार का डंडा 20–25 संख्या प्रति एकड़ कें हिसाब से लगा दें ताकि रात में उल्लू आकर बैठे।

ऊपरी– मध्यम जमीन(दोन 3):

हरा मटर : समय पर बोये गये मटर, लत्तर फैलाव के साथ–साथ फूल आने की अवस्था में है तथा मौसम में उतार–चढ़ाव के कारण चूर्णिल फफूँदी बीमारी के बढ़ जाने की आशंका है अतः निवारण हेतु कैराथेन 0.1(1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) या सल्फेक्स 0.3 प्रतिशत् (3 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव करें।

आलू: पिछले पॉच दिन छिट–पुट बादलों से घीरा रहना एवम् आद्रता में ह्रास के साथ हीं साथ दिन एवम रात्री के मृदा तथा वातावरण के तापमान में उतार–चढ़ाव होने से आलू के पौधों(बुआई के एक माह, शाकीय वृद्धि अवस्था) में अगेती तथा पिछेती अंगमारी से संक्रमित होने की सम्भावना बढ़ जाती है । मौसम साफ होने पर इसकी तीव्रता और बढ़ जाती है। अतः बचाव हेतु 2 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। कहीं आलू पौधों के शाकीय वृद्धि अवस्था में पत्तियों के मुड़ जाने की स्थिति जान पड़ रही है। अतः बचाव हेतु बाजार में उपलब्ध केलडान 50 एस पी 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। जो किसान भाई आगात आलू किस्म लगाए 20–25 दिनों के बाद भी मिट्टी नहीं चढ़ाऐं हों, तो मिट्टी चढ़ाने का कार्य पूरी कर लें ।

जो किसान भाई आलू की उन्नत किस्म जैसे कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी अशोका, कुफरी कंचन, कुफरी पुखराज इत्यादि लेना चाहते हों, तेा खेतों की तैयारी के वक्त गोबर की सडी खाद 10–15 टन प्रति एकड़ की दर से साथ ही साथ 260 किलोग्राम यूरिया + 560 किलोग्राम एस एस पी + 160 किलोग्राम एम ओ पी एवम् 10–12 क्विंटल प्रति एकड़ बीज की आवश्यकता होती है। आलू को काट कर लगाने पर तीन स्वस्थ ऑख वाले टुकड़े को 3 ग्राम डायथेन एम 45 या 2 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड प्रति लीटर पानी की दर से धोल में 20 मिनट तक उपचारित कर छाया में सुखाकर 24 घंटे के अंदर बुआई करें। समूचा आलू 30–40 ग्राम लगाना श्रेष्ठकर होता है। कतार से कतार 50 सेंटीमीटर एवम् कंद से कंद 15–20 सेंटीमीटर रखना चाहिए। डच हो द्वारा खेतों में 50 सेंटीमीटर की दूरी में 5–6 सेंटीमीटर गहरी नाली बनायें। यूरिया की आधी मात्रा तथा एस एस पी एवम् एम ओ पी की की पूरी मात्रा बनाये गये नाली में डाल दें फिर गोबर की सडी खाद डालें। इसके ऊपर से समूचा आलू 20–40 ग्राम को डाल कर मिट्टी को चढ़ा दें। कंद बुआई के बाद खेत में जल का जमाव न होनें दे।

चने : पौधें की खोटनी कर हल्की सिंचाई के दो दिनों के उपरान्त 5 किलोग्राम यूरिया का भुरकाव करें। इससे शाखओं की एवम् दानो की संख्या में वृद्धि होती है। सम्भव हो तो सिंचाई के साथ–साथ बुझा चूना का व्यवहार में लें। पीथियम् जड़ एवम् बीज गलन बीमारी के लिए मेटालेक्सिल 1 मि०ली० प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें। खरपतवार नियंत्रण हेतु बुआई के दो–तीन दिनों के बाद एलाक्लोर 50 ई सी 800 मि०ली० प्रति एकड़ के हिसाब से व्यवहार करे।

तोरी : वर्तामान तोरी फसल में (फूलावस्थ) लाही कीटों का प्रकोप बढ़ता दिख रहा है। सुझाव है कि मिथाइल डिमेटोन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में 5 मिलीलीटर टीपोल अच्छी तरह से मिला कर छिड़काव करें।

सरसों :लाही कीटों का प्रकोप बढ़ता दिख रहा है। सुझाव है कि मिथाइल डिमेटोन या डायमेथोएट 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में 5 मिलीलीटर टीपोल अच्छी तरह से मिला कर छिड़काव करें। सुबह के वक्त ज्यादा देर तक कुहासा बना रहने की स्थिति में चूर्णिल फफूँद बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु सल्फेक्स 3 ग्राम या केराथेन 1 मि०ली० प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें। बुआई के 35–40 दिनो के बाद पत्तियॉ झुलस रहें हों तो बचाव हेतु कन्टाफ (हेक्साकोनाजोल) 1 मिलीलीटर या इनडोफिल एम 45 2. ग्राम या थयोफिनेट मिथाईल(रोको) या टॉपसिन 1 ग्राम शाम के वक्त दे।

रबी फसलों की बआई से पहले बीजोपचार हेतु सुझावः

दो– तीन सिंचाई की व्यवस्था होने से सरसो ़मटर एवम् चना तथा एक से दो सिंचाई की व्यवस्था होने से तीसी ले। अभी असिंचित गेंहूँ मध्यम जमीन मे धान कटाइ के बाद या खली पड़े खेंत में बंआई कर सके है। उन्नत किस्म सी 306, के 8027, एच डी आर 77, के 8962 इत्यादि का व्यवहार उपचारति कर हीं उपयोग करें। **मृदा में मौजूद नमी की उपयोगता एवम् दोहरे फसल लाभ के लिए चना, तीसी , खेसाड़ी एवम् बरसीम चारा फसल को पैरा या रीले फसल प्रणाली से लें। बीज दर सामान्य से 50 प्रतिशत् ज्यादा लेंयानी की 1.5 गुना लें।**

गेहूँ– कारबेंडाजिम 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण बाजार में बेविस्टीन, डेरोसाल, हिटास्टीन धनुस्टीन आदि नाम से उपलब्ध है का 2 ग्राम या कार्बोक्सीन 75 प्रतिशत चूर्ण जो बीटावेक्स, बीटावेक्स पावर के नाम से प्रचलित है का 2 ग्राम या टेबुकोनाजोल (रैक्सिल) 1.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। बीज को मिट्टी के घड़े में भर कर थोडा भाग ख़ाली रखे। बताये गये दवा में थोडा पानी मिलाकर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को घड़े में डाल कर अच्छी तरह से मिला लें ताकि दवा की परत बीज पर अच्छी तरह से चढ़ जाए। इसे छाया में 6–8 धंटा सुखा कर ही बुआई करें।

चना, मटर, मसूर – बीजों को बुआई से पूर्व कवकनाशी जैसे बेविस्टीन से 2 ग्राम प्रति कि० ग्रा० अथवा थीरम 3 ग्राम प्रति कि० ग्रा० बीज की दर से उपचारित कर लें। 24 धंटा बाद कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपाइरीफास 20 ई सी से 5 मिलीलीटर प्रति कि० ग्रा० बीज की दर से उपचारित कर लें। कवक एवम् कीटनाशी रसायन से उपचारित बीज का 6–8 घंटां तक छाया में सुखने के बाद जैविक फफूँदनाशी ट्राइकोडरमा 5 ग्राम एवम् स्यूडोमोनास 10 ग्राम से उपचारित कर लें। कुछ घंटों के उपरान्त पीएसबी एवम् राईजोबियम(जीवाणु खाद) कल्चर से उपचारित कर ही खेतों में बुआई करें। आधा लीटर पानी में 100 ग्राम गूड़ को 15 मिनट तक गर्म कर ठंड़ा होने दें। 200 ग्राम राईजोबियम पैकेट को ठंडे घोल में मिला दें। तैयार मात्रा आधा एकड़ में बुआई हेतु बीज के लिए उपयुक्त है।

सरसों, तोरी, राई, तीसी– बेविस्टीन 2 ग्राम या थीरम या कैप्टान के 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर सूखने के पश्चात् बीज की बुआई करें।

आलू– इण्डोफिल एम 45, डायथेन एम 45 (मैंकोजेब 75 प्रतिशत् घूलनशील चूर्ण) या रिडोमील एम जेड 2–3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से धोल बनाकर आवष्यक मात्रा में आलू बीज को धोल में 30 मिनट तक डुबोये रखने के उपरान्त हीं निकाल कर छाया में सूखाकर लगावें। बचे धोल को खेतों में छिडक दें।

कीट से बचाव– दीमक, कटुआ एवम् कजरा पिल्लू जैसे कीटों से बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 प्रतिशत् तरल कीटनाशी जो बाजार में डर्सबान, रडार इत्यादि नामों से मिलता है का 5 मि०ली० प्रति लीटर पानी से उपचारित करें।

गेंहूँ : **नवम्बर माह के प्रथम सत्ताह तक** – इस माह गेहूँ की बुआई, कल्ले निकलने एवम् मूकुट जड़ बनने की अवस्था में है। दोनों ही अवस्था में सिंचाई के बाद मिट्टी भुरभुरी कर घास पात निकालनें के बाद नाइट्रोजन की एक चौथाई, 10–12.5 किलोग्राम (22–27 किलोग्राम यूरिया) प्रति एकड़ के हिसाअ से उपरिवेशन करें।

दिसम्बर माह के द्वितीय सप्ताह तक बुआई के लिये उन्नत किस्म के 9107 एवम एच यू डब्लू 234, 468, इत्यादि का व्यवहार उपचारति कर हीं व्यवहार में लें। 20 सेटीमीटर की दूरी पर ठोस कतार पर बुआई करें। उर्वरक हेतु 60: 25: 15 किलोग्राम एन : पी$_2$ओ$_5$: के$_2$ओ प्रति एकड़ की दर से आवश्यकता होती है। एक तिहाई, 45 किलोग्राम यूरिया + पूरी फसफोरस एवम् पोटाश की मात्रा बुआई के वक्त डालें। दीमक से बचाव के लिये खेतों की तैयारी वक्त 10 किलोग्राम क्लोरपारीफास 1.5 प्रतिशत् धूल को अच्छी तरह से मिला लें। **गेंहूँ में खरपतवार नियंत्रण हेतु** (सिर्फ क्राउन जड़ बनने की अवस्था में हीं : 20–25 दिनों पर) आइसोप्रोटुरॉन 75 प्रतिशत् धूल 600 ग्राम एवम् 2 4 डी 300 ग्राम या सल्फोसल्फूरान 75 प्रतिशत् डब्लू पी 500 ग्राम प्रति एकड़ की दर से बुआई के 25–30 दिनों के अंदर 300–4.00 लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। **गेंहूँ के शाकीय अवस्था (कल्ले) में मौसम ठंड़ एवम् कुछ देर तक कुहासा रहने से पौधों के पत्ती झुलस रहें तो बचाव हेतु इन्डोफिल एम 45 का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।**

अरहरः:पौधे अभी फूल एवम् फली आन की अवस्था में है एवम् मौसम साफ के साथ–साथ दिन और रात के वातावरण के तापमान में ज्यादा अंतर होने से कीटों का प्रकोप होने की काफी सम्भवना है। अतः बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस 4 प्रतिशत् का 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। बोरेक्स 4 कि०/एकड़ के दर से मिट्टी में पौधे के समीप डालें या 1–1.5 पी पी एम बोरेक्स पत्तियों पर छिड़काव करें। कीटों से बचाव हेतु क्लोरपायरिफास 4 प्रतिशत् का 1.5 मिलीलीटर या मोनोक्रोटोफास 1 मिलीलीटर या इनडोक्साकार्व 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। प्रोफेनोफॉस 50 ई सी, मेथेमील 40 एस पी मोनोक्रोटोफॉस 36 एस एल लारवा को मार देता हे पर पत्तो से जालीनुमा आवरण कीटनाशी के सम्पर्क में नहीं आ पाता है । अतः गैस बनने वाली दवा जैसे डीडीभीपी 0.5 मि०ली० प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़कवा करेने से जालीनुमा आवरण से कीट बाहर निकल कीटनाशी के सम्पर्क में आकर प्रभावित हो जायेगा। माईट्स एवम् लाही के लिए डायमेथेएट 30 इसी 2 मि०ली० और अकारीसाईड जैसे डाकोफॉल 18.5 इसी 2.5 मि०ली० ; ब्लिस्टर बीटल हेतु साईपरमेथ्रिन 10 इसी 1 मि०ली० प्रति ली० पानी या लेम्डा साइलाथ्रिन 5 इसी 1 मि०ली० प्रति ली० पानी; स्टेरीलिटी मोजाईक के लिए डाकोफॉल 18.5 इसी 2.5 मि०ली० या ऑक्सीडेमोटान मिथाईल 25 इसी का 2 मि०ली० या डायमेथेएट 30 इसी 2 मि०ली० प्रति ली० पानी में तैयार धोल का छिड़काव एक पंक्ति छोड़ कर 10 दिनो के अेतराल पर करें।

तीसी : पौधें अभी शाखा बनने एवम् वृद्धि हाने की अवस्था में है। 35(शाखा बनने एवम् वृद्धि) दिन होने पर सिंचाई हेतु प्रबंध करें। 20–45 दिन तक फसलों की प्रतियोगिता खरपतवारों से बनी रहती है। अतः नियेत्रण हेतु आइसोप्रोटूरॉन 75 डब्लू पी 400 ग्रा० के साथ–साथ 2,4–डी (सोडियम नमक) 200 ग्रा० बुआई के 30–35 दिनो पर व्यवहार में लें तथा एक सप्ताह के बाद हाथों के द्वारा निकाई कर लें। अभी के मौसम में अंगमारी एवम् चूर्णिल फफूँद बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु आइप्रोडीऑन 25 प्रतिशत् डब्लू पी+ कार्बेडाजिम 25 प्रतिशतडब्लू पी जिसका बाजारु नाम डबल डोज के नाम से उपलब्ध है का 2 ग्रा० प्रति ली० में तैयार घोल का छिड़काव शाम के वक्त सप्ताहिक अंतराल पर दो बार करें। चूर्णिल फफूँद बीमारी से बचाव हेतु ट्राईडेमॉर्फ 80 प्रतिशत ई सी (केलिक्सीन) का 5 मि०ली० प्रति 10 ली० पानी या केराथेन 1 मि०ली० प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें।

• **सब्जियॉः–**

सब्जियॉः–

मौसम की अनुकुलता के कारण बैंगन तथा भिण्डी में धड़ एवम् फली छेदक, पत्ती झुलसा एवम् पत्ती मुड़ण टमाटर एवम् मिर्च में और लाल मकड़ी लत्तर वाले बरसाती सब्जियों में होने की प्रबल सम्भावना है। पत्ती झुलसा टमाटर एवम् मिर्च में रिडोमिल एम जेड़ 1.5 मिलीलीटर तथा पत्ती मुड़ण में सुपार डी या न्युराल डी का 0.5 मिलीलीटर, लाल मकड़ी के प्रकोप से बचने के लिए डायकोफाल या ओमाइट या इथ्यिान 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

सभी लत्तर वाली सब्जी, बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में कीटों का प्रकोप बढ़ गया है । अतः बचाव हेतू जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोप्रिड 1 मिलीलीटर प्रति 5 लीटर पानी या कुंग फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

टमाटर में अगेती तथा पछेती अंगमारी से ग्रसित खेतों मे 3 ग्राम इनडोफिल एम 45 रसायन या रिडोमिल एम जेड 1.5 ग्राम तथा बैंगन में अंगमारी रोग से ग्रसित खेतों मे् 3 ग्राम ब्लाइटॉक्स 50 प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करे।

टमाटर :– स्वर्ण लालिमा, अर्का आभा, **अगात पत्तागोभी** :– प्राईड ऑफ इन्डिया, गोल्डेन एकर, अर्ली ड्रम हेड, **फूलगोभी :–** पूसा केतकी, कुंआरी, अर्ली सिंथेटिक, पूसा दीपाली, पूसा शुभ्रा एवम् **बैंगन :–** स्वर्ण प्रतिभा, स्वर्ण श्यामली, स्वर्ण मणी । प्याज का बीचड़ा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म–**एन 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एग्रीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा व्हाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना व्हाइट, बेलारी रेड** इत्यादि का हीं चयन करें।

4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतू 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंड़ाई का कार्य करनें में आसानी हों। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी भुरभूरी गोबर की खाद से दबा कर ढ़क दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फूहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेभिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

प्याज का बीचड़ा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म–**एन 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एग्रीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा व्हाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना व्हाइट, बेलारी रेड** इत्यादि का हीं चयन करें। 4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतू 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंड़ाई का कार्य करनें में आसानी हों। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी भुरभूरी गोबर की खाद से दबा कर ढ़क दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फूहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेभिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

सभी लत्तर वाली सब्जी, बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में कीटों का प्रकोप बढ़ गया है । अतः बचाव हेतू जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी या आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोरपीड 1 या कुंग फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। टमाटर में अगेती तथा पछेती अंगमारी से ग्रसित खेतों मे 3 ग्राम इनडोफिल एम 45 रसायन या रिडोमिल एम जेड 1.5 ग्राम तथा बैंगन में अंगमारी रोग से ग्रसित खेतों मे् 3 ग्राम ब्लाइटॉक्स 50 प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करे।

फलदार पौधों को लगाने का अनुकुल मौसम है। इस क्षेत्र के फलों के निम्नलिखित किस्मों को लें:–

शरीफाः– अर्का साहन **केलाः–** बेहुला, रोबस्टा, जी–9 **पपीताः–** पूसा डेलीसीयस, पूसा डवार्फ, कुर्ग हनि ड्यू, पूसा नन्हा एवम् **अमरुद** :–अलाहाबाद सफेदा, लखनऊ 49, अर्का मृदुला, ललीत, अर्का अमूल्य **सब्जियॉ :** सभी लत्तर वाली सब्जी, बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में गिरावट होने से कीटों का प्रकोप बढ़ गया है । अतः जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी या इन्डोसल्फान 4 प्रतिशत् धूल 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोरपीड 1 ग्राम या कुंग फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। टमाटर में झुलसा एवम् म्लानी रोग से ग्रसित खेतों में बीम रसायन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करे। भावी मौसम को देखते हुये वृक्षों पर मोनोक्रोटोफास 1 मिलीलीटर या मिथाइल डिमोटान1 मिलीलीटर या इमिडाक्लोरपीड 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

पशुओं के लिए सुक्षाव – मवेशियों को रात में ठंड़ से बचाव हेतु घर में रखें। फर्श को प्रत्येक दिन सूखा रखें। खुंर पका–मुँह पका, हेमोरहेजिक सेप्टिसेमिया, ब्लैक क्वॉटर एवम् एनटेरोक्सेमिया बीमारी से बचाव हेतु इस महिने में टीकाकरण करें। थनैल बीमरी से बचाव हेतु विशेष ध्यान दें। बाह्य परजीवीें से बचाव के लिए शरीर पर दवा का घोल लगाऐं। जरुरत के हिसाब से लवन एवम् मिनरल मिक्सचर को मुख्य भोजन में मिला कर दें। ठंड़ में चारा के आभाव से बचने के लिए चारा का भंड़ारण करें। चारा फसल हेतु बरसीम को मध्य माह तक एवम् जौ की उन्नत किस्म जैसे – सिरसा ओट 6 एवम् 9, जे एच ओ 822 एवम् 851 इस माह के अंत तक बुआई समाप्त कर लें। इस माह बकरियों एवम् भेंड़ों को प्रत्येक तिसरे साल पी पी आर से बचाव हेतु टीकाकरण करें। बाह्यपरजीवी से बचाव हेतु भेड़ो को कतरनी के 21 दिनों के बाद संक्रमण से बचाव के लिए निस्सक्रामक दवा का घोल से नहलाऐं।

ब्रायलय(चूजा) मुर्गीपालन :– यदि चूजे ब्रूडर के नीचे बल्ब के नजदिक एक साथ हो जाये तो समझना चाहिए की ब्रूडर में तापमान कम है । तापमान बढ़ाने के लिए अतिरिक्त बल्ब का इन्तजाम करें या जो बल्ब ब्रूडर में लगा है, उसको थोड़ा नीचे कर दें। यदि चूजे बल्ब से काफी दूर किनारे में जाकर जमा हो तो समझना चाहिये कि ब्रूडर में तापमान ज्यादा है । ऐसी स्थिति में तामगान कम करें । इसके लिए बल्ब को ऊपर खीचें या बल्ब की संख्या या पावर को कम करें । अतः चूजो पर नजर रखे, समझकर तापमान नियंत्रित करें ।

मछली पालन : वातावरण के तापमान में कमी के साथ–साथा पानी के तापमान में भी कमी होने के कारण तालाब में अधिक संख्या में मछली होने के चलते बहुत हीं अधिक घातक एवम् संक्रामक बीमारी लाल धब्बा(ई०यू०एस०) होने की सम्भावना अधिक होने के साथ हीं साथ देखे भी जा रहें हैं। अतः बचाव हेतु 1 लीटर एक्वानीम 10 एक्स 100 लीटर पानी में घोल बनाकर तालाब के सभी स्थान पर सामान मात्रा में छिड़काव करें। इसके छिड़काव से पानी की कठोरता में बढ़त के साथ–साथ मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा में बढ़त हो जाती है। जिसके चलते मछली उतपादन बढ़ जाता है।

बिनोद कुमार
तकनिकी पदाधिकारी

प्रदीप प्रसाद
सह निदेशक

GRAMIN KRISHI MAUSAM SEWA
BIRSA AGRICULTURAL UNIVERSITY
(ZONAL RESEARCH STATION, DARISAI)

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, दारीसाई को भारत मौसम विभाग, राँची द्वारा भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मन्त्रालय, नई दिल्ली, से प्राप्त जानकारी के अनुसार जिला सरायकेला तथा उसके आसपास के क्षेत्रों के लिए अगले 120 घण्टों के दौरान मौसम पूर्वानुमान

एवम्

मौसम खेती परामर्श बुलेटिन

अगले पाँच दिनों के लिए मौसम पूर्वानुमान (14–18 नवम्बर 2018)

Ref : 13/2018/GKMS/ Darisai(92)
Date: 13.11.2018
Web : bauranchi.org

Ph No. –9334729740(m)
binodranchi@gmail.com

मौसम इकाई / दिनांक	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षा (मिलीमीटर)	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.
अधिकतम तापमान (^{0}C)	31	31	31	31	31
न्यूनतम तापमान (^{0}C)	18	17	17	16	16
आकाश मे बादल की स्थिति	छिट–पुट बादल	घने बादल	धूप	धूप	धूप
अधिकतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत)	89	85	89	89	88
न्यूनतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत)	36	31	28	30	27
हवा की गति (किलोमीटर प्रतिघंटा)	4	7	7	5	5
हवा की दिशा	पश्चिम्–उत्तर से	पश्चिम् से	पश्चिम् से	पश्चिम् से	दक्षिण–पूर्व से

उपरोक्त मौसम पूर्वानुमान पर आधारित किसान भाईयों के लिए कृषि सामयिक सलाह

संकेत– मौसम साफ रहने की पूर्ण सम्भावना है। सिंचाई दवा का छिड़काव एवम् खाद का भुरकाव कर सकते है। SPI value (0 to 0.99 हल्का नमी) दिनांक 07.11.2018 तक के अनुसार मृदा में नमी बरकरा है। मृदा में मौजूद नमी की उपयोगता एवम् दोहरे फसल लाभ के लिए चना, तीसी , खेसाड़ी एवम् बरसीम चारा फसल को पैरा या रीले फसल प्रणाली से लें। बीज दर समान्य से 50 प्रतिशत् ज्यादा लें यानी की समान्य 1.5 गुना लें। दो– तीन सिंचाई की व्यवस्था होने से ही सरसो, मटर एवम् चना तथा एक से दो सिंचाई की व्यवस्था होने से तीसी ले। अभी असिंचित गेंहूँ मध्यम जमीन मे धान कटाई के बाद या खली पड़े खेंत में बुआई कर सके है। उन्नत किस्म सी 306, के 8027, एच डी आर 77, के 8962 इत्यादि का व्यवहार उपचारित कर ही उपयोग करें। NDVI value (.25 to 0.45) दिनांक 04.11.2018 तक के अनूसार रबी फसल की बढ़त अच्छी एवम् बिना तनाव साथ ही साथ अच्छे फैलाव में है। NDVI value (.55 to 0.65) दिनांक 04.11.2018 तक के अनूसार मध्यम एवम् नीचली जमीन में धान परिपक्व होने एवम् प्रजनन अवस्था में है।

ऊपरी, मध्यम एवम् निचली जमीन खेती : ऊपरी जमीन में लिए गए कुल्थी, सरगुजा, लोबीया, राइस बिन एवम् कुसुम इत्यादी में निकाई–गुड़ाई के बाद हल्की सिंचाई करें। **मध्यम एवम् निचली जमीन** में वभिन्न क्षेत्रों में धान दुग्धा या दाने सक्त होने की अवस्था में है एवम् इसका सीधा प्रभाव उपज पर पड़ता है। अगले पाँचों दिन **आसमान साफ रहने की** संभावना है। इस अवस्था में गंधी बग कीटों का प्रकोप बढ़ने की सम्भावना एवम् प्रकोप होने पर दानें बदरंग होते दिखेंगें। अतः इसके रोक थाम हेतु मिथाइल पाराथीयॉन 2 प्रतिशत् धूल या क्लोरपायरीफास 4 प्रतिशत् या इमीडाक्लोरपिड धूल 8–10 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से सुबह के वक्त या शाम सूर्यास्त से पूर्व भुरकाव करें । **अन्य सुझाव–** दूध भरने एवम् दाने सक्त होने तक संवेदनशील अवस्था होती है। अतः धान की जड, में नमी नितांत आवश्यक है। इस अवस्था में नमी की कमी वाले खेत में आहर, नाहर, नदी, कुआँ इत्यादि या किसी भी जल स्रोत से कम से कम एक सिंचाई अवश्य कोशिश करें। बाली बनने की अवस्था में यूरिया का उपरिवेशन करें एवम् कीट–व्याधी के प्रति सजग रहें। धान में चूहों का प्रकोप हो, तो मेढ़ों को पतला कर छेदों के समीप धनात्मक आकार का डंडा 20–25 संख्या प्रति एकड़ के हिसाब से लगा दें ताकि रात में उल्लू आकर बैठे।

ऊपरी– मध्यम जमीन(दोन 3)**:**

हरा मटर : समय पर बोये गये मटर, लत्तर फैलाव के साथ–साथ फूल आने की अवस्था में है तथा मौसम में उतार–चढ़ाव के कारण चूर्णिल फफूँदी बीमारी के बढ़ जाने की आशंका है अतः निवारण हेतु कैराथेन 0.1(1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) या सल्फेक्स 0.3 प्रतिशत् (3 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव करें।

आलू: पिछले पाँच दिन छिट–पुट बादलों से घीरा रहना एवम् आद्रता में ह्रास के साथ हीं साथ दिन एवम रात्री के मृदा तथा वातावरण के तापमान में उतार–चढ़ाव होने से आलू के पौधों(बुआई के एक माह, शाकीय वृद्धि अवस्था) में अगेती तथा पिछेती अंगमारी से संक्रमित होने की सम्भावना बढ़ जाती है । मौसम साफ होने पर इसकी तीव्रता और बढ़ जाती है। अतः बचाव हेतु 2 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। कहीं आलू पौधों के शाकीय वृद्धि अवस्था में पत्तियों के मुड़ जाने की स्थिति जान पड़ रही है। अतः बचाव हेतु बाजार में उपलब्ध केलडान 50 एस पी 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। जो किसान भाई आगात आलू किस्म लगाए 20–25 दिनों के बाद भी मिट्टी नहीं चढ़ाएँ हों, तो मिट्टी चढ़ाने का कार्य पूरी कर लें ।

जो किसान भाई आलू की उन्नत किस्म जैसे कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी अशोका, कुफरी कंचन, कुफरी पुखराज इत्यादि लेना चाहते हों, तो खेतों की तैयारी के वक्त गोबर की सडी खाद 10–15 टन प्रति एकड़ की दर से साथ ही साथ 260 किलोग्राम यूरिया + 560 किलोग्राम एस पी + 160 किलोग्राम एम ओ पी एवम् 10–12 क्विंटल प्रति एकड़ बीज की आवश्यकता होती है। आलू को काट कर लगाने पर तीन स्वस्थ आँख वाले टुकड़े को 3 ग्राम डायथेन एम 45 या 2 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड प्रति लीटर पानी की दर से धोल में 20 मिनट तक उपचारित कर छाया में सुखाकर 24 घंटे के अंदर बुआई करें। समूचा आलू 30–40 ग्राम लगाना श्रेष्ठकर होता है। कतार से कतार 50 सेंटीमीटर एवम् कंद से कंद 15–20 सेंटीमीटर रखना चाहिए। उच हो द्वारा खेतों में 50 सेंटीमीटर की दूरी में 5–6 सेंटीमीटर गहरी नाली बनायें। यूरिया की आधी मात्रा तथा एस एस पी एवम् एम ओ पी की की पूरी मात्रा बनाये गये नाली में डाल दें फिर गोबर की सडी खाद डालें। इसके ऊपर से समूचा आलू 20–40 ग्राम को डाल कर मिट्टी को चढ़ा दें। कंद बुआई के बाद खेत में जल का जमाव न होने दें।

चने : पौधें की खोटनी कर हल्की सिंचाई के दो दिनों के उपरान्त 5 किलोग्राम यूरिया का भुरकाव करें। इससे शाखओं की एवम् दानो की संख्या में वृद्धि होती है। सम्भव हो तो सिंचाई के साथ–साथ बुझा चूना का व्यवहार में लें। पीथियम् जड़ एवम् बीज गलन बीमारी के लिए मेटालेक्सिल 1 मि०ली० प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें। खरपतवार नियंत्रण हेतु बुआई के दो–तीन दिनों के बाद एलाक्लोर 50 ई सी 800 मि०ली० प्रति एकड़ के हिसाब से व्यवहार करे।

तोरी : वर्तामान तोरी फसल में (फूलावस्थ) लाही कीटों का प्रकोप बढ़ता दिख रहा है। सुझाव है कि मिथाइल डिमेटोन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में 5 मिलीलीटर टीपोल अच्छी तरह से मिला कर छिड़काव करें।

सरसों :लाही कीटों का प्रकोप बढ़ता दिख रहा है। सुझाव है कि मिथाइल डिमेटोन या डायमेथोएट 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में 5 मिलीलीटर टीपोल अच्छी तरह से मिला कर छिड़काव करें। सुबह के वक्त ज्यादा देर तक कुहासा बना रहने की स्थिति में चूर्णिल फफूँद बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु सल्फेक्स 3 ग्राम या केराथेन 1 मि०ली० प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें। बुआई के 35–40 दिनो के बाद पत्तियॉ झुलस रहें हों तो बचाव हेतु कन्टाफ (हेक्साकोनाजोल) 1 मिलीलीटर या इनडोफिल एम 45 2, ग्राम या थयोफिनेट मिथाईल(रोको) या टॉपसिन 1 ग्राम शाम के वक्त दे।

रबी फसलों की बआई से पहले बीजोपचार हेतु सुझाव:

दो– तीन सिंचाई की व्यवस्था होने से सरसो, मटर एवम् चना तथा एक से दो सिंचाई की व्यवस्था होने से तीसी ले। अभी असिंचित गेंहूँ मध्यम जमीन मे धान कटाइ के बाद या खली पड़े खेंत में बंआई कर सके है। उन्नत किस्म सी 306, के 8027, एच डी आर 77, के 8962 इत्यादि का व्यवहार उपचारित कर ही उपयोग करें। **मृदा में मौजूद नमी की उपयोगता एवम् दोहरे फसल लाभ के लिए चना, तीसी , खेसाड़ी एवम् बरसीम चारा फसल को पैरा या रीले फसल प्रणाली से लें। बीज दर सामान्य से 50 प्रतिशत् ज्यादा लेंयानी की 1.5 गुना लें।**

गेहूँ– कारबेंडाजिम 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण बाजार में बेविस्टीन, डेरोसाल, हिटास्टीन धनुस्टीन आदि नाम से उपलब्ध है का 2 ग्राम या कार्बोक्सीन 75 प्रतिशत चूर्ण जो बीटावेक्स, बीटावेक्स पावर के नाम से प्रचलित है का 2 ग्राम या टेबुकोनाजोल (रैक्सिल) 1.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। बीज को मिट्टी के घड़े में भर कर थोडा भाग खाली रखे। बताये गये दवा में थोडा पानी मिलाकर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को घड़े में डाल कर अच्छी तरह से मिला लें ताकि दवा की परत बीज पर अच्छी तरह से चढ़ जाए। इसे छाया में 6–8 घंटा सुखा कर ही बुआई करें।

चना, मटर, मसूर – बीजों को बुआई से पूर्व कवकनाशी जैसे बेविस्टीन से 2 ग्राम प्रति कि० ग्रा० अथवा थीरम 3 ग्राम प्रति कि० ग्रा० बीज की दर से उपचारित कर लें। 24 घंटा बाद कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपाइरीफास 20 ई सी से 5 मिलीलीटर प्रति कि० ग्रा० बीज की दर से उपचारित कर लें। कवक एवम् कीटनाशी रसायन से उपचारित बीज का 6–8 घंटां तक छाया में सुखने के बाद जैविक फफूँदनाशी ट्राइकोडरमा 5 ग्राम एवम् स्यूडोमोनास 10 ग्राम से उपचारित कर लें। कुछ घंटों के उपरान्त पीएसबी एवम् राईजोबियम(जीवाणु खाद) कल्चर से उपचारित कर ही खेतों में बुआई करें। आधा लीटर पानी में 100 ग्राम गूड़ को 15 मिनट तक गर्म कर ठंडा होने दें। 200 ग्राम राईजोबियम पैकेट को ठंडे घोल में मिला दें। तैयार मात्रा आधा एकड़ में बुआई हेतु बीज के लिए उपयुक्त है।

सरसों, तोरी, राई, तीसी– बेविस्टीन 2 ग्राम या थीरम या कैप्टान के 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर सूखने के पश्चात् बीज की बुआई करें।

आलू– इण्डोफिल एम 45, डायथेन एम 45 (मैंकोजेब 75 प्रतिशत् घूलनशील चूर्ण) या रिडोमील एम जेड 2–3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से धोल बनाकर आवष्यक मात्रा में आलू बीज को धोल में 30 मिनट तक डुबोये रखने के उपरान्त हीं निकाल कर छाया में सूखाकर लगावें। बचे धोल को खेतों में छिडक दें।

कीट से बचाव– दीमक, कटुआ एवम् कजरा पिल्लू जैसे कीटों से बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 प्रतिशत् तरल कीटनाशी जो बाजार में उर्सबान, रडार इत्यादि नामों से मिलता है का 5 मि०ली० प्रति लीटर पानी से उपचारित करें।

मौसम आधारित विशेष सलाह

***गेहूँ :* नवम्बर माह के प्रथम सप्ताह तक** – इस माह गेहूँ की बुआई, कल्ले निकलने एवम् मूकुट जड़ बनने की अवस्था में है। दोनों ही अवस्था में सिंचाई के बाद मिट्टी भुरभुरी कर घास पात निकालनें के बाद नाइट्रोजन की एक चौथाई, 10–12.5 किलोग्राम (22–27 किलोग्राम यूरिया) प्रति एकड़ के हिसाब से उपरिवेशन करें।

दिसम्बर माह के द्वितीय सप्ताह तक बुआई के लिये उन्नत किस्म के 9107 एवम एच यू डब्लू 234, 468, इत्यादि का व्यवहार उपचारित कर हीं व्यवहार में लें। 20 सेंटीमीटर की दूरी पर ठोस कतार पर बुआई करें। उर्वरक हेतु 60: 25: 15 किलोग्राम एन : पी$_2$ओ$_5$: के$_2$ओ प्रति एकड़ की दर से आवश्यकता होती है। एक तिहाई, 45 किलोग्राम यूरिया + पूरी फसफोरस एवम् पोटाश की मात्रा बुआई के वक्त डालें। दीमक से बचाव के लिये खेतों की तैयारी वक्त 10 किलोग्राम क्लोरपाफीकास 1.5 प्रतिशत् धूल को अच्छी तरह से मिला लें। **गेहूँ में खरपतवार नियंत्रण हेतु** (सिर्फ क्राउन जड़ बनने की अवस्था में हीं : 20–25 दिनों पर) आइसोप्रोटुरॉन 75 प्रतिशत् धूल 600 ग्राम एवम् 2 4 डी 300 ग्राम या सल्फोसल्फूरान 75 प्रतिशत् डब्लू पी 500 ग्राम प्रति एकड़ की दर से बुआई के 25–30 दिनों के अंदर 300–4.00 लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। **गेहूँ के शाकीय अवस्था (कल्ले) में मौसम ठंड़ एवम् कुछ देर तक कुहासा रहने से पौधों के पत्ती झुलस रहें तो बचाव हेतु इन्डोफिल एम 45 का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।**

अरहर:पौधे अभी फूल एवम् फली आन की अवस्था में है एवम् मौसम साफ के साथ–साथ दिन और रात के वातावरण के तापमान में ज्यादा अंतर होने से कीटों का प्रकोप होने की काफी सम्भवना है। अतः बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस 4 प्रतिशत् का 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। बोरेक्स 4 कि०/एकड़ के दर से मिट्टी में पौधे के समीप डालें या 1–1.5 पी पी एम बोरेक्स पत्तियों पर छिड़काव करें। कीटों से बचाव हेतु क्लोरपायरीफास 4 प्रतिशत् का 1.5 मिलीलीटर या मोनोक्रोटोफास 1 मिलीलीटर या इनडोक्साकार्ब 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। प्रोफेनोफॉस 50 ई सी, मेथेमील 40 एस पी मोनोक्रोटोफॉस 36 एस एल लारवा को मार देता हे पर पत्तो से जालीनुमा आवरण कीटनाशी के सम्पर्क में नहीं आ पाता है । अतः गैस बनने वाली दवा जैसे डीडीमीपी 0.5 मि०ली० प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव करेने से जालीनुमा आवरण से कीट बाहर निकल कीटनाशी के सम्पर्क में आकर प्रभावित हो जायेगा। माईट्स एवम् लाही के लिए डायमेथेएट 30 इसी 2 मि०ली० और अकारीसाईड जैसे डाकोफॉल 18.5 इसी 2.5 मि०ली० ; ब्लिस्टर बीटल हेतु साईपरमेथ्रिन 10 इसी 1 मि०ली० प्रति ली० पानी या लेम्डा साइलाथ्रिन 5 इसी 1 मि०ली० प्रति ली० पानी; स्टेरीलिटी मोजाईक के लिए डाकोफॉल 18.5 इसी 2.5 मि०ली० या ऑक्सीडेमोटान मिथाईल 25 इसी का 2 मि०ली० या डायमेथेएट 30 इसी 2 मि०ली० प्रति ली० पानी में तैयार धोल का छिड़काव एक पंक्ति छोड़ कर 10 दिनो के अेतराल पर करें।

तीसी : पौधें अभी शाखा बनने एवम् वृद्धि होने की अवस्था में है। 35(शाखा बनने एवम् वृद्धि) दिन होने पर सिंचाई हेतु प्रबंध करें। 20–45 दिन तक फसलों की प्रतियोगिता खरपतवारों से बनी रहती है। अतः नियेत्रण हेतु आइसोप्रोटूरॉन 75 डब्लू पी 400 ग्रा० के साथ–साथ 2,4–डी (सोडियम नमक) 200 ग्रा० बुआई के 30–35 दिनो पर व्यवहार में लें तथा एक सप्ताह के बाद हाथों के द्वारा निकाई कर लें। अभी के मौसम में अंगमारी एवम् चूर्णिल फफूँद बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु आइप्रोडीऑन 25 प्रतिशत डब्लू पी+ कार्बेंडाजिम 25 प्रतिशतडब्लू पी जिसका बाजारु नाम डबल डोज के नाम से उपलब्ध है का 2 ग्रा० प्रति ली० में तैयार घोल का छिड़काव शाम के वक्त सम्ताहिक अंतराल पर दो बार करें। चूर्णिल फफूँद बीमारी से बचाव हेतु ट्राईडेमॉर्फ 80 प्रतिशत ई सी (केलिक्सीन) का 5 मि०ली० प्रति 10 ली० पानी या केराथेन 1 मि०ली० प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें।

• सब्जियॉ:–

सब्जियॉ:–

मौसम की अनुकुलता के कारण बैंगन तथा भिण्डी में धड़ एवम् फली छेदक, पत्ती झुलसा एवम् पत्ती मुड़ण टमाटर एवम् मिर्च में और लाल मकड़ी लत्तर वाले बरसाती सब्जियों में होने की प्रबल सम्भावना है। पत्ती झुलसा टमाटर एवम् मिर्च में रिडोमिल एम जेड 1.5 मिलीलीटर तथा पत्ती मुड़ण में सुपार डी या न्युरान डी का 0.5 मिलीलीटर, लाल मकड़ी के प्रकोप से बचने के लिए डायकोफाल या ओमाइट या इथ्यिान 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

सभी लत्तर वाली सब्जी, बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में कीटों का प्रकोप बढ़ गया है । अतः बचाव हेतू जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोप्रिड 1 मिलीलीटर प्रति 5 लीटर पानी या कुंग फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

टमाटर में अगेती तथा पछेती अंगमारी से ग्रसित खेतों मे 3 ग्राम इनडोफिल एम 45 रसायन या रिडोमिल एम जेड 1.5 ग्राम तथा बैंगन में अंगमारी रोग से ग्रसित खेतों मे 3 ग्राम ब्लाइटॉक्स 50 प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करे।

टमाटर :– स्वर्ण लालिमा, अर्का आभा, **अगात पत्तागोभी** :– प्राईड ऑफ इन्डिया, गोल्डेन एकर, अर्ली ड्रम हेड, **फूलगोभी :–** पूसा केतकी, कुंआरी, अर्ली सिंथेटिक, पूसा दीपाली, पूसा शुभ्रा एवम् **बैंगन :–** स्वर्ण प्रतिभा, स्वर्ण श्यामली, स्वर्ण मणी । प्याज का बीचडा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म–**एन 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एग्रीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा व्हाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना व्हाइट, बेलारी रेड** इत्यादि का हीं चयन करें।

4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतू 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंड़ाई का कार्य करनें में आसानी हों। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी भुरभूरी गोबर की खाद से दबा कर ढ़क दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फूहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेभिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

प्याज का बीचडा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म–**एन 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एग्रीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा व्हाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना व्हाइट, बेलारी रेड** इत्यादि का हीं चयन करें। 4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतू 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंड़ाई का कार्य करनें में आसानी हों। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी भुरभूरी गोबर की खाद से दबा कर ढ़क दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फूहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेभिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

सभी लत्तर वाली सब्जी, बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में कीटों का प्रकोप बढ़ गया है । अतः बचाव हेतू जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी या आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोरपीड 1 या कुंग फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। टमाटर में अगेती तथा पछेती अंगमारी से ग्रसित खेतों मे 3 ग्राम इनडोफिल एम 45 रसायन या रिडोमिल एम जेड 1.5 ग्राम तथा बैंगन में अंगमारी रोग से ग्रसित खेतों मे 3 ग्राम ब्लाइटॉक्स 50 प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करे।

फलदार पौधों को लगाने का अनुकुल मौसम है। इस क्षेत्र के फलों के निम्नलिखित किस्मों को लें:–

शरीफा– अर्का साहन **केला**– बेहुला, रोबस्टा, जी–9 **पपीता**– पूसा डेलीसीयस, पूसा डवार्फ, कुर्ग हनि ड्यू, पूसा नन्हा एवम् **अमरुद** :–अलाहाबाद सफेदा, लखनऊ 49, अर्का मृदुला, ललीत, अर्का अमूल्य **सब्जियॉ :** सभी लत्तर वाली सब्जी, बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में गिरावट होने से कीटों का प्रकोप बढ़ गया है । अतः जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी या इन्डोसल्फान 4 प्रतिशत् धूल 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोरपीड 1 ग्राम या कुंग फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। टमाटर में झुलसा एवम् म्लानी रोग से ग्रसित खेतों में बीम रसायन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करे। भावी मौसम को देखते हुये वृक्षों पर मोनोक्रोटोफास 1 मिलीलीटर या मिथाइल डिमोटान1 मिलीलीटर या इमिडाक्लोरपीड 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

पशुओं के लिए सुझाव – मवेशियों को रात में ठंड़ से बचाव हेतु घर में रखें। फर्श को प्रत्येक दिन सूखा रखें। खुंर पका–मुँह पका, हेमोरहेजिक सेप्टिसेमिया, ब्लैक क्वार्टर एवम् एनटेरोक्सेमिया बीमारी से बचाव हेतु इस महिने में टीकाकरण करें। थनैल बीमरी से बचाव हेतु विशेष ध्यान दें। बाह्य परजीवी से बचाव के लिए शरीर पर दवा का घोल लगाएँ। जरुरत के हिसाब से लवन एवम् मिनरल मिक्सचर को मुख्य भोजन में मिला कर दें। ठंड़ में चारा के आभाव से बचने के लिए चारा का भंडारण करें। चारा फसल हेतु बरसीम को मध्य माह तक एवम् जौ की उन्नत किस्म जैसे – सिरसा ओट 6 एवम् 9, जे एच ओ 822 एवम् 851 इस माह के अंत तक बुआई समाप्त कर लें। इस माह बकरियों एवम् भेड़ों को प्रत्येक तिसरे साल पी पी आर से बचाव हेतु टीकाकरण करें। बाह्यपरजीवी से बचाव हेतु भेड़ो को कतरनी के 21 दिनों के बाद संक्रमण से बचाव के लिए निस्सकामक दवा का घोल से नहलाएँ।

बायलय(चूजा) मुर्गीपालन :– यदि चूजे ब्रूडर के नीचे बल्ब के नजदिक एक साथ हो जाये तो समझना चाहिए की ब्रूडर में तापमान कम है । तापमान बढ़ाने के लिए अतिरिक्त बल्ब का इन्तजाम करें या जो बल्ब ब्रूडर में लगा है, उसको थोड़ा नीचे कर दें। यदि चूजे बल्ब से काफी दूर किनारे में जाकर जमा हो तो समझना चाहिये कि ब्रूडर में तापमान ज्यादा है । ऐसी स्थिति में ताममान कम करें । इसके लिए बल्ब को ऊपर खीचें या बल्ब की संख्या या पावर को कम करें । अतः चूजो पर नजर रखे, समझकर तापमान नियंत्रित करें ।

मछली पालन : वातावरण के तापमान में कमी के साथ–साथा पानी के तापमान में भी कमी होने के कारण तालाब में अधिक संख्या में मछली होने के चलते बहुत हीं अधिक घातक एवम् संक्रामक बीमारी लाल धब्बा(ई०यू०एस०) होने की सम्भावना अधिक होने के साथ हीं साथ देखे भी जा रहें हैं। अतः बचाव हेतु 1 लीटर एक्वानीम 10 एक्स 100 लीटर पानी में घोल बनाकर तालाब के सभी स्थान पर सामान मात्रा में छिड़काव करें। इसके छिड़काव से पानी की कठोरता में बढ़त के साथ–साथ मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा में बढ़त हो जाती है। जिसके चलते मछली उतपादन बढ़ जाता है।

बिनोद कुमार
तकनिकी पदाधिकारी

प्रदीप प्रसाद
सह निदेशक

GRAMIN KRISHI MAUSAM SEWA

BIRSA AGRICULTURAL UNIVERSITY

(ZONAL RESEARCH STATION, DARISAI)

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, के अन्तर्गत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, दारीसाई को भारत मौसम विभाग, राँची द्वारा भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मन्त्रालय, नई दिल्ली, से प्राप्त जानकारी के अनुसार जिला पश्चिमी सिंहभूम तथा उसके आसपास के क्षेत्रों के लिए अगले 120 घण्टों के दौरान मौसम पूर्वानुमान

एवम्

मौसम खेती परामर्श बुलेटिन

Ref : 13/2018/GKMS/ Darisai(92)
Date:13.11.2018
Web : bauranchi.org

Ph No. –9334729740(m)
binodranchi@gmail.com

अगले पॉच दिनों के लिए मौसम पूर्वानुमान (14–18 नवम्बर 2018)

मौसम इकाई/दिनांक	14 नवम्बर	15 नवम्बर	16 नवम्बर	17 नवम्बर	18 नवम्बर
वर्षा (मिलीमीटर)	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.	0 मि.मी.
अधिकतम तापमान (^{0}C)	28	28	28	28	28
न्यूनतम तापमान (^{0}C)	16	17	16	15	15
आकाश मे बादल की स्थिति	छिट–पुट बादल	घने बादल	धूप	धूप	धूप
अधिकतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत)	67	64	60	57	53
न्यूनतम सपेक्षिक आर्द्रता (प्रतिशत)	35	30	29	32	27
हवा की गति (किलोमीटर प्रतिघंटा)	2	4	3	3	3
हवा की दिशा	दक्षिण–पश्चिम् से	दक्षिण–पश्चिम् से	दक्षिण–पश्चिम् से	दक्षिण–पश्चिम् से	पूर्व से

उपरोक्त मौसम पूर्वानुमान पर आधारित किसान भाईयों के लिए कृषि सामयिक सलाह

मौसम आधारित विशेष सलाह

संकेत– मौसम साफ रहने की पूर्ण सम्भावना है। सिंचाई दवा का छिड़काव एवमु खाद का भुरकाव कर सकते है। SPI value (0 to 0.99 हल्का नमी) दिनांक 07.11.2018 तक के अनूसार मृदा में नमी बरकरा है। मृदा में मौजूद नमी की उपयोगता एवम् दोहरे फसल लाभ के लिए चना, तीसी , खेसाड़ी एवम् बरसीम चारा फसल को पैरा या रीले फसल प्रणाली से लें। बीज दर समान्य से 50 प्रतिशत् ज्यादा लें यानी की समान्य 1.5 गुना लें। दो– तीन सिंचाई की व्यवस्था होने से हीं सरसो ्मटर एवम् चना तथा एक से दो सिंचाई की व्यवस्था होने से तीसी ले। अभी असिंचित गेंहूँ मध्यम जमीन मे धान कटाई के बाद या खली पड़े खेंत में बुआई कर सके है। उन्नत किस्म सी 306, के 8027, एच डी आर 77, के 8962 इत्यादि का व्यवहार उपचारित कर हीं उपयोग करें। NDVI value (.25 to 0.45) दिनांक 04.11.2018 तक के अनूसार रबी फसल की बढ़त अच्छी एवम् बिना तनाव साथ ही साथ अच्छे फैलाव में है। NDVI value (.55 to 0.65) दिनांक 04.11.2018 तक के अनूसार मध्यम एवम् नीचली जमीन में धान परिपक्व होने एवम् प्रजनन अवस्था में है।

ऊपरी, मध्यम एवम् निचली जमीन खेती : ऊपरी जमीन में लिए गए कुल्थी, सरगुजा, लोबीया. राइस बिन एवम् कुसुम इत्यादी में निकाई–गुड़ाई के बाद हल्की सिंचाई करें। **मध्यम एवम् निचली जमीन** में वभिन्न क्षेत्रों में धान दुग्धा या दाने सक्त होने की अवस्था में है एवम् इसका सीधा प्रभाव उपज पर पड़ता है। अगले पॉचों दिन **आसमान साफ रहने की** संभावना है। इस अवस्था में गंधी बग कीटों का प्रकोप बढ़ने की सम्भावना एवम् प्रकोप होने पर दानें बदरंग होते दिखेंगें। अतः इसके रोक थाम हेतु मिथाइल पाराथीयॅान 2 प्रतिशत् धूल या क्लोरपायरीफास 4 प्रतिशत् या इमीडाक्लोरपिड धूल 8–10 किलोग्राम प्रति एकड़ के दर से सुबह के वक्त या शाम सूर्यास्त से पूर्व भुरकाव करें । **अन्य सुझाव–** दूध भरने एवम् दाने सक्त होने तक संवेदनशील अवस्था होती है। अतः धान की जड. में नमी नितांत आवश्यक है। इस अवस्था में नमी की कमी वाले खेत में आहर, नाहर, नदी, कुऑ इत्यादि या किसी भी जल स्रोत से कम से कम एक सिंचाई अवश्य कोशिश करें। बाली बनने की अवस्था में यूरिया का उपरिवेशन करें एवम् कीट–व्याधी के प्रति सजग रहें। धान में चूहों का प्रकोप हो, तो मेढ़ों को पतला कर छेदों के समीप धनात्मक आकार का डंडा 20–25 संख्या प्रति एकड़ कें हिसाब से लगा दें ताकि रात में उल्लू आकर बैठे।

ऊपरी– मध्यम जमीन(दोन 3):

हरा मटर : समय पर बोये गये मटर, लत्तर फैलाव के साथ–साथ फूल आने की अवस्था में है तथा मौसम में उतार–चढ़ाव के कारण चूर्णिल फफूॅदी बीमारी के बढ़ जाने की आशंका है अतः निवारण हेतु कैराथेन 0.1(1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में) या सल्फेक्स 0.3 प्रतिशत् (3 ग्राम प्रति लीटर पानी में) का छिड़काव करें।

आलू: पिछले पॉच दिन छिट–पुट बादलों से घीरा रहना एवम् आद्रता में ह्रास के साथ हीं साथ दिन एवम रात्री के मृदा तथा वातावरण के तापमान में उतार–चढ़ाव होने से आलू के पौधों(बुआई के एक माह, शाकीय वृद्धि अवस्था) में अगेती तथा पिछेती अंगमारी से संक्रमित होने की सम्भावना बढ़ जाती है । मौसम साफ होने पर इसकी तीव्रता और बढ़ जाती है। अतः बचाव हेतु 2 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। कहीं आलू पौधों के शाकीय वृद्धि अवस्था में पत्तियों के मुड़ जाने की स्थिति जान पड़ रही है। अतः बचाव हेतु बाजार में उपलब्ध केलडान 50 एस पी 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। जो किसान भाई आगात आलू किस्म लगाए 20–25 दिनों के बाद भी मिट्टी नहीं चढ़ाऍ हों, तो मिट्टी चढ़ाने का कार्य पूरी कर लें ।

जो किसान भाई आलू की उन्नत किस्म जैसे कुफरी चन्द्रमुखी, कुफरी अशोका, कुफरी कंचन, कुफरी पुखराज इत्यादि लेना चाहते हों, तेा खेतों की तैयारी के वक्त गोबर की सडी खाद 10–15 टन प्रति एकड़ की दर से साथ ही साथ 260 किलोग्राम यूरिया + 560 किलोग्राम एस एस पी + 160 किलोग्राम एम ओ पी एवम् 10–12 क्विंटल प्रति एकड़ बीज की आवश्यकता होती है। आलू को काट कर लगाने पर तीन स्वस्थ ऑख वाले टुकड़े को 3 ग्राम डायथेन एम 45 या 2 ग्राम क्रिलेक्सील या रिडोमिल एम जेड प्रति लीटर पानी की दर से धोल में 20 मिनट तक उपचारित कर छाया में सुखाकर 24 घंटे के अंदर बुआई करें। समूचा आलू 30–40 ग्राम लगाना श्रेष्ठकर होता है। कतार से कतार 50 सेंटीमीटर एवम् कंद से कंद 15–20 सेंटीमीटर रखना चाहिए। डच हो द्वारा खेतों में 50 सेंटीमीटर की दूरी में 5–6 सेंटीमीटर गहरी नाली बनायें। यूरिया की आधी मात्रा तथा एस एस पी एवम् एम ओ पी की की पूरी मात्रा बनाये गये नाली में डाल दें फिर गोबर की सडी खाद डालें। इसके ऊपर से समूचा आलू 20–40 ग्राम को डाल कर मिट्टी को चढ़ा दें। कंद बुआई के बाद खेत में जल का जमाव न होनें दे।

चने : पौधें की खोटनी कर हल्की सिंचाई के दो दिनों के उपरान्त 5 किलोग्राम यूरिया का भुरकाव करें। इससे शाखओं की एवम् दानो की संख्या में वृद्धि होती है। सम्भव हो तो सिंचाई के साथ–साथ बुझा चूना का व्यवहार में लें। पीथियम् जड़ एवम् बीज गलन बीमारी के लिए मेटालेक्सिल 1 मि०ली० प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें। खरपतवार नियंत्रण हेतु बुआई के दो–तीन दिनों के बाद एलाक्लोर 50 ई सी 800 मि०ली० प्रति एकड़ के हिसाब से व्यवहार करे।

तोरी : वर्तामान तोरी फसल में (फूलावस्थ) लाही कीटों का प्रकोप बढ़ता दिख रहा है। सुझाव है कि मिथाइल डिमेटोन 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में 5 मिलीलीटर टीपोल अच्छी तरह से मिला कर छिड़काव करें।

सरसों :लाही कीटों का प्रकोप बढ़ता दिख रहा है। सुझाव है कि मिथाइल डिमेटोन या डायमेथेएट 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में 5 मिलीलीटर टीपोल अच्छी तरह से मिला कर छिड़काव करें। सुबह के वक्त ज्यादा देर तक कुहासा बना रहने की स्थिति में चूर्णिल फफूॅद बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु सल्फेक्स 3 ग्राम या केराथेन 1 मि०ली० प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें। बुआई के 35–40 दिनो के बाद पत्तियॉ झुलस रहें हों तो बचाव हेतु कन्टाफ (हेक्साकोनाजोल) 1 मिलीलीटर या इनडोफिल एम 45 2. ग्राम या थयोफिनेट मिथाईल(रोको) या टॉपसिन 1 ग्राम शाम के वक्त दे।

रबी फसलों की बआई से पहले बीजोपचार हेतु सुझावः

दो– तीन सिंचाई की व्यवस्था होने से सरसो ्मटर एवम् चना तथा एक से दो सिंचाई की व्यवस्था होने से तीसी ले। अभी असिंचित गेंहूँ मध्यम जमीन मे धान कटाइ के बाद या खली पड़े खेंत में बंआई कर सके है। उन्नत किस्म सी 306, के 8027, एच डी आर 77, के 8962 इत्यादि का व्यवहार उपचारित कर हीं उपयोग करें। **मृदा में मौजूद नमी की उपयोगता एवम् दोहरे फसल लाभ के लिए चना, तीसी , खेसाड़ी एवम् बरसीम चारा फसल को पैरा या रीले फसल प्रणाली से लें। बीज दर सामान्य से 50 प्रतिशत् ज्यादा लेंयानी की 1.5 गुना लें।**

गेहूँ– कारबेंडाजिम 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण बाजार में बेविस्टीन, डेरोसाल, हिटास्टीन धनुस्टीन आदि नाम से उपलब्ध है का 2 ग्राम या कार्बोक्सीन 75 प्रतिशत चूर्ण जो बीटावेक्स, बीटावेक्स पावर के नाम से प्रचलित है का 2 ग्राम या टेबुकोनाजोल (रैक्सिल) 1.5 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें। बीज को मिट्टी के घड़े में भर कर थोडा भाग ख़ाली रखे। बताये गये दवा में थोडा पानी मिलाकर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को घड़े में डाल कर अच्छी तरह से मिला लें ताकि दवा की परत बीज पर अच्छी तरह से चढ़ जाए। इसे छाया में 6–8 धंटा सुखा कर ही बुआई करें।

चना, मटर, मसूर – बीजों को बुआई से पूर्व कवकनाशी जैसे बेविस्टीन से 2 ग्राम प्रति कि० ग्रा० अथवा थीरम 3 ग्राम प्रति कि० ग्रा० बीज की दर से उपचारित कर लें। 24 धंटा बाद कजरा पिल्लू से बचाव हेतु क्लोरपाइरीफास 20 ई सी से 5 मिलीलीटर प्रति कि० ग्रा० बीज की दर से उपचारित कर लें। कवक एवम् कीटनाशी रसायन से उपचारित बीज का 6–8 घंटां तक छाया में सुखने के बाद जैविक फफूॅदनाशी ट्राइकोडरमा 5 ग्राम एवम् स्यूडोमोनास 10 ग्राम से उपचारित कर लें। कुछ घंटों के उपरान्त पीएसबी एवम् राईजोबियम(जीवाणु खाद) कल्चर से उपचारित कर ही खेतों में बुआई करें। आधा लीटर पानी में 100 ग्राम गूड़ को 15 मिनट तक गर्म कर ठंड़ा होने दें। 200 ग्राम राईजोबियम पैकेट को ठंड़े घोल में मिला दें। तैयार मात्रा आधा एकड़ में बुआई हेतु बीज के लिए उपयुक्त है।

सरसों, तोरी, राई, तीसी– बेविस्टीन 2 ग्राम या थीरम या कैप्टान के 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर सूखने के पश्चात् बीज की बुआई करें।

आलू– इण्डोफिल एम 45, डायथेन एम 45 (मैंकोजेब 75 प्रतिशत् घूलनशील चूर्ण) या रिडोमील एम जेड 2–3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से धोल बनाकर आवष्यक मात्रा में आलू बीज को धोल में 30 मिनट तक डुबोये रखने के उपरान्त हीं निकाल कर छाया में सूखाकर लगावें। बचे धोल को खेतों में छिडक दें।

कीट से बचाव– दीमक, कटुआ एवम् कजरा पिल्लू जैसे कीटों से बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस 20 प्रतिशत् तरल कीटनाशी जो बाजार में डर्सबान, रडार इत्यादि नामों से मिलता है का 5 मि०ली० प्रति लीटर पानी से उपचारित करें।

गेंहूँ : **नवम्बर माह के प्रथम सत्ताह तक** – इस माह गेहूँ की बुआई, कल्ले निकलने एवम् मूकुट जड़ बनने की अवस्था में है। दोनों ही अवस्था में सिंचाई के बाद मिट्टी भुरभुरी कर घास पात निकालनें के बाद नाइट्रोजन की एक चौथाई, 10–12.5 किलोग्राम (22–27 किलोग्राम यूरिया) प्रति एकड़ के हिसाअ से उपरिवेशन करें।

दिसम्बर माह के द्वितीय सप्ताह तक बुआई के लिये उन्नत किस्म के 9107 एवम एच यू डब्लू 234, 468, इत्यादि का व्यवहार उपचारति कर हीं व्यवहार में लें। 20 सेटीमीटर की दूरी पर ठोस कतार पर बुआई करें। उर्वरक हेतु 60: 25: 15 किलोग्राम एन : पी$_2$ओ$_5$: के$_2$ओ प्रति एकड़ की दर से आवश्यकता होती है। एक तिहाई, 45 किलोग्राम यूरिया + पूरी फसफोरस एवम् पोटाश की मात्रा बुआई के वक्त डालें। दीमक से बचाव के लिये खेतों की तैयारी वक्त 10 किलोग्राम क्लोरपारीफास 1.5 प्रतिशत् धूल को अच्छी तरह से मिला लें। **गेहूँ में खरपतवार नियंत्रण हेतु** (सिर्फ क्राउन जड़ बनने की अवस्था में हीं : 20–25 दिनों पर) आइसोप्रोटुरॅान 75 प्रतिशत् धूल 600 ग्राम एवम् 2 4 डी 300 ग्राम या सल्फोसल्फूरान 75 प्रतिशत् डब्लू पी 500 ग्राम प्रति एकड़ की दर से बुआई के 25–30 दिनों के अंदर 300–4.00 लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। **गेहूँ के शाकीय अवस्था (कल्ले) में मौसम ठंड़ एवम् कुछ देर तक कुहासा रहने से पौधों के पत्ती झुलस रहें तो बचाव हेतु इन्डोफिल एम 45 का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।**

अरहर::पौधे अभी फूल एवम् फली आन की अवस्था में है एवम् मौसम साफ के साथ–साथ दिन और रात के वातावरण के तापमान में ज्यादा अंतर होने से कीटों का प्रकोप होने की काफी सम्भवना है। अतः बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस 4 प्रतिशत् का 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। बोरेक्स 4 कि०/एकड़ के दर से मिट्टी में पौधे के समीप डालें या 1–1.5 पी पी एम बोरेक्स पत्तियों पर छिड़काव करें। कीटों से बचाव हेतु क्लोरपायरीफास 4 प्रतिशत् का 1.5 मिलीलीटर या मोनोकोटोफास 1 मिलीलीटर या इनडोक्साकार्व 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। प्रोफेनोफॉस 50 ई सी, मेथेमील 40 एस पी मोनोक्रोटोफॉस 36 एस एल लारवा को मार देता हे पर पत्तो से जालीनुमा आवरण कीटनाशी के सम्पर्क में नहीं आ पाता है । अतः गैस बनने वाली दवा जैसे डीडीभीपी 0.5 मि०ली० प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़कवा करेने से जालीनुमा आवरण से कीट बाहर निकल कीटनाशी के सम्पर्क में आकर प्रभावित हो जायेगा। माईट्स एवम् लाही के लिए डायमेथेएट 30 इसी 2 मि०ली० और अकारीसाईड जैसे डाकोफॉल 18.5 इसी 2.5 मि०ली० ; ब्लिस्टर बीटल हेतु साईपरमेथ्रिन 10 इसी 1 मि०ली० प्रति ली० पानी या लेम्डा साइलाथ्रिन 5 इसी 1 मि०ली० प्रति ली० पानी; स्टेरीलिटी मोजाईक के लिए डाकोफॅाल 18.5 इसी 2.5 मि०ली० या ऑक्सीडेमोटान मिथाईल 25 इसी का 2 मि०ली० या डायमेथेएट 30 इसी 2 मि०ली० प्रति ली० पानी में तैयार धोल का छिड़काव एक पंक्ति छोड़ कर 10 दिनो के अेतराल पर करें।

तीसी : पौधें अभी शाखा बनने एवम् वृद्धि हाने की अवस्था में है। 35(शाखा बनने एवम् वृद्धि) दिन होने पर सिंचाई हेतु प्रबंध करें। 20–45 दिन तक फसलों की प्रतियोगिता खरपतवारों से बनी रहती है। अतः नियेत्रण हेतु आइसोप्रोटूरॅान 75 डब्लू पी 400 ग्रा० के साथ–साथ 2,4–डी (सोडियम नमक) 200 ग्रा० बुआई के 30–35 दिनो पर व्यवहार में लें तथा एक सप्ताह के बाद हाथों के द्वारा निकाई कर लें। अभी के मौसम में अंगमारी एवम् चूर्णिल फफूॅद बीमारी की बेहद सम्भावना है। अतः बचाव हेतु आइप्रोडीऑन 25 प्रतिशत् डब्लू पी+ कार्बेडाजिम 25 प्रतिशतडब्लू पी जिसका बाजारु नाम डबल डोज के नाम से उपलब्ध है का 2 ग्रा० प्रति ली० में तैयार घोल का छिड़काव शाम के वक्त सम्ताहिक अंतराल पर दो बार करें। चूर्णिल फफूॅद बीमारी से बचाव हेतु ट्राईडेमॉर्फ 80 प्रतिशत ई सी (केलिक्सीन) का 5 मि०ली० प्रति 10 ली० पानी या केराथेन 1 मि०ली० प्रति प्रति ली० पानी में तैयार घोल का छिड़काव शाम के समय करें।

• सब्जियॉः–

सब्जियॉः–

मौसम की अनुकुलता के कारण बैंगन तथा भिण्डी में धड़ एवम् फली छेदक, पत्ती झुलसा एवम् पत्ती मुड़ण टमाटर एवम् मिर्च में और लाल मकड़ी लत्तर वाले बरसाती सब्जियों में होने की प्रबल सम्भावना है। पत्ती झुलसा टमाटर एवम् मिर्च में रिडोमिल एम जेड़ 1.5 मिलीलीटर तथा पत्ती मुड़ण में सुपार डी या न्युराल डी का 0.5 मिलीलीटर, लाल मकड़ी के प्रकोप से बचने के लिए डायकोफाल या ओमाइट या इथ्यिान 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

सभी लत्तर वाली सब्जी, बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में कीटों का प्रकोप बढ़ गया है । अतः बचाव हेतू जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोप्रिड 1 मिलीलीटर प्रति 5 लीटर पानी या कुंग फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

टमाटर में अगेती तथा पछेती अंगमारी से ग्रसित खेतों मे 3 ग्राम इनडोफिल एम 45 रसायन या रिडोमिल एम जेड 1.5 ग्राम तथा बैंगन में अंगमारी रोग से ग्रसित खेतों मे् 3 ग्राम ब्लाइटॉक्स 50 प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करे।

टमाटर :– स्वर्ण लालिमा, अर्का आभा, **अगात पत्तागोभी** :– प्राईड ऑफ इन्डिया, गोल्डेन एकर, अर्ली ड्रम हेड, **फूलगोभी :–** पूसा केतकी, कुंआरी, अर्ली सिंथेटिक, पूसा दीपाली, पूसा शुभ्रा एवम् **बैंगन :–** स्वर्ण प्रतिभा, स्वर्ण श्यामली, स्वर्ण मणी । प्याज का बीचड़ा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म–**एन 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एग्रीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा व्हाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना व्हाइट, बेलारी रेड** इत्यादि का हीं चयन करें।

4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतू 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंड़ाई का कार्य करनें में आसानी हों। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी भुरभूरी गोबर की खाद से दबा कर ढ़क दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फूहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेभिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

प्याज का बीचडा तैयार करने का उत्तम समय है। अधिक उपजशील किस्म–**एन 53, पूसा रेड, अरका निकेतन, अरका कल्याण, एग्रीफाउण्ड डार्क रेड, पूसा व्हाइट राउण्ड एवम् फ्लैट, पूसा माधवी, बम्बई सलेक्सन, पटना व्हाइट, बेलारी रेड** इत्यादि का हीं चयन करें। 4 किलोग्राम प्रति एकड़ बीज हेतू 200 वर्ग मीटर तथा 3 मीटर लम्बा, 2 मीटर चौड़ा एवम् 15 सेंटीमीटर जमीन से उपर पौधशाला की तैयारी करें। पौधशाला के बीच कम से कम 70 सेंटीमीटर का फर्क होना चाहिये ताकी गुंड़ाई का कार्य करनें में आसानी हों। 3 ग्राम थीरम से प्रति किलो बीजों को उपचारित कर 5 सेंटीमीटर की दूरी पर गिरायें। बीजों को सूखी मिट्टी या सूखी भुरभूरी गोबर की खाद से दबा कर ढ़क दें। इसके उपर पुआल की परत डालें। पानी के फूहारे से पौधशाला की सिंचाई करें। अंकुरित होने पर पुआल की परत को सावधानी पूर्वक हटा लें। बीमारी से बचाव के लिये 2 ग्राम बेभिस्टीन प्रति लीटर पानी में घोल बना कर 10 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

सभी लत्तर वाली सब्जी, बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में कीटों का प्रकोप बढ़ गया है । अतः बचाव हेतू जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी या आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोरपीड 1 या कुंग फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। टमाटर में अगेती तथा पछेती अंगमारी से ग्रसित खेतों मे 3 ग्राम इनडोफिल एम 45 रसायन या रिडोमिल एम जेड 1.5 ग्राम तथा बैंगन में अंगमारी रोग से ग्रसित खेतों मे् 3 ग्राम ब्लाइटॉक्स 50 प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करे।

फलदार पौधों को लगाने का अनुकुल मौसम है। इस क्षेत्र के फलों के निम्नलिखित किस्मों को लेंः–

शरीफाः– अर्का साहन **केलाः–** बेहुला, रोबस्टा, जी–9 **पपीताः–** पूसा डेलीसीयस, पूसा डवार्फ, कुर्ग हनि ड्यू, पूसा नन्हा एवम् **अमरुद** :–अलाहाबाद सफेदा, लखनऊ 49, अर्का मृदुला, ललीत, अर्का अमूल्य **सब्जियॉ :** सभी लत्तर वाली सब्जी, बैंगन, फुलगोभी, बंधागोभी में वर्तमान मौसम में गिरावट होने से कीटों का प्रकोप बढ़ गया है । अतः जैविक कीटनाशी बायोलेप या डायपेल 1ग्राम प्रति लीटर पानी या इन्डोसल्फान 4 प्रतिशत् धूल 10 किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। आवश्यकता होने पर इमिडाक्लोरपीड 1 ग्राम या कुंग फू 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें। टमाटर में झुलसा एवम् म्लानी रोग से ग्रसित खेतों में बीम रसायन 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करे। भावी मौसम को देखते हुये वृक्षों पर मोनोक्रोटोफास 1 मिलीलीटर या मिथाइल डिमोटान1 मिलीलीटर या इमिडाक्लोरपीड 1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बना कर छिड़काव करें।

पशुओं के लिए सुक्षाव – मवेशियों को रात में ठंड़ से बचाव हेतु घर में रखें। फर्श को प्रत्येक दिन सूखा रखें। खुंर पका–मुॅह पका, हेमोरहेजिक सेप्टिसेमिया, ब्लैक क्वॉटर एवम् एनटेरोक्सेमिया बीमारी से बचाव हेतु इस महिने में टीकाकरण करें। थनैल बीमरी से बचाव हेतु विशेष ध्यान दें। बाह्य परजीवी ँ से बचाव के लिए शरीर पर दवा का घोल लगाऍ। जरुरत के हिसाब से लवन एवम् मिनरल मिक्सचर को मुख्य भोजन में मिला कर दें। ठंड़ में चारा के आभाव से बचने के लिए चारा का भंड़ारण करें। चारा फसल हेतु बरसीम को मध्य माह तक एवम् जौ की उन्नत किस्म जैसे – सिरसा ओट 6 एवम् 9, जे एच ओ 822 एवम् 851 इस माह के अंत तक बुआई समाप्त कर लें। इस माह बकरियों एवम् भेंड़ों को प्रत्येक तिसरे साल पी पी आर से बचाव हेतु टीकाकरण करें। बाह्यपरजीवी से बचाव हेतु भेड़ो को कतरनी के 21 दिनों के बाद संक्रमण से बचाव के लिए निस्सक्रामक दवा का घोल से नहलाऍ।

ब्रायलय(चूजा) मुर्गीपालन :– यदि चूजे ब्रूडर के नीचे बल्ब के नजदिक एक साथ हो जाये तो समझना चाहिए की ब्रूडर में तापमान कम है । तापमान बढ़ाने के लिए अतिरिक्त बल्ब का इन्तजाम करें या जो बल्ब ब्रूडर में लगा है, उसको थोड़ा नीचे कर दें। यदि चूजे बल्ब से काफी दूर किनारे में जाकर जमा हो तो समझना चाहिये कि ब्रूडर में तापमान ज्यादा है । ऐसी स्थिति में तापमान कम करें । इसके लिए बल्ब को ऊपर खीचें या बल्ब की संख्या या पावर को कम करें । अतः चूजो पर नजर रखे, समझकर तापमान नियंत्रित करें ।

मछली पालन : वातावरण के तापमान में कमी के साथ–साथा पानी के तापमान में भी कमी होने के कारण तालाब में अधिक संख्या में मछली होने के चलते बहुत हीं अधिक घातक एवम् संक्रामक बीमारी लाल धब्बा(ई०यू०एस०) होने की सम्भावना अधिक होने के साथ हीं साथ देखे भी जा रहें हैं। अतः बचाव हेतु 1 लीटर एक्वानीम 10 एक्स 100 लीटर पानी में घोल बनाकर तालाब के सभी स्थान पर सामान मात्रा में छिड़काव करें। इसके छिड़काव से पानी की कठोरता में बढ़त के साथ–साथ मिट्टी में नाइट्रोजन की मात्रा में बढ़त हो जाती है। जिसके चलते मछली उतपादन बढ़ जाता है।

बिनोद कुमार
तकनिकी पदाधिकारी

प्रदीप प्रसाद
सह निदेशक